RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या44/प्रकाशन तिथि 1 फरवरी 2026

अंक 473 ○ फरवरी 2026

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

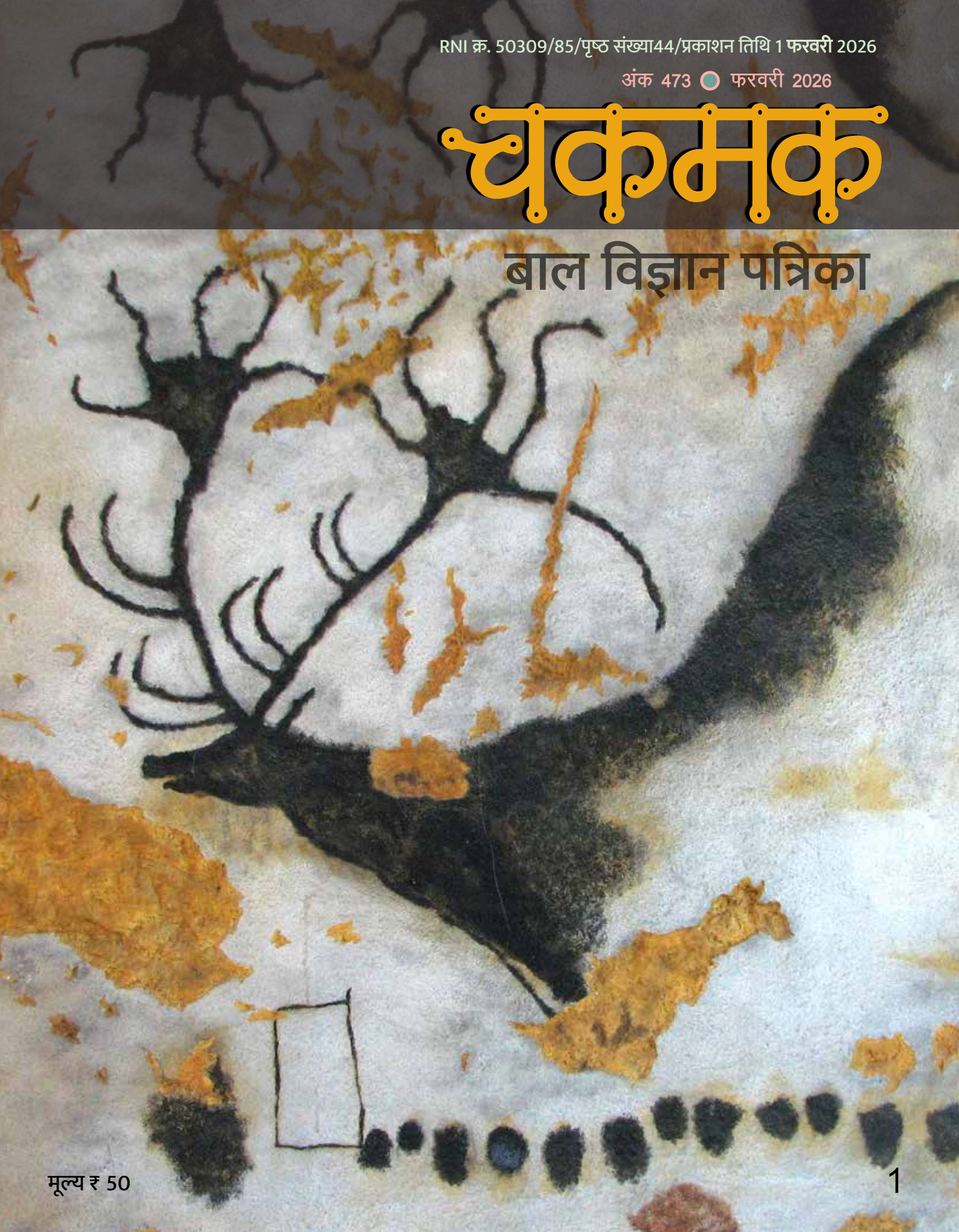

मूल्य ₹ 50

दो कविताएँ

प्रभात
चित्र: प्रोइति रॉय

रिक्शेवाला

स्टेशन से घर-गलियों तक
सफर सभी का हो गया
देर रात को रिक्शेवाला
रिक्शे पर ही सो गया।

टप-टप छप-छप

मैंने मेहनत बहुत कड़ी की
बहा पसीना टप-टप
फिर तो आसमान में तैरा
पानी में भी छप-छप।

अंक 473 • फरवरी 2026

चकमक

इस बार

दो कविताएँ - प्रभात 2

चित्रकला के इर्द-गिर्द - 1
- सी. एन.सुब्रह्मण्यम् 4

अमूर फाल्कन - पीयूष सेकसरिया 6

गणित है मज़ेदार - गॉस की कहानी
- आलोका कान्हेरे 10

फिल्मी बातें - जुमांजी 13

मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 18
- आर एस रेश्मू राज, ए पी माधवन व साथी 14

पीछे छूटा हुआ भाई - रिनचिन 16

चित्रपहेली 22

जमाली-कमाली - वसुन्धरा बहुगुणा 24

भूलभुलैया 27

क्यों-क्यों 28

बेलिया पलाश - डॉ. किशोर पंवार 32

अन्तर ढूँढो 33

माथापच्ची 34

मेरा पन्ना 36

तुम भी जानो 43

आवरण चित्र: फ्रांस की लास्को गुफा में बने चित्र की एक प्रतिकृति।

सम्पादक
विनता विश्वनाथन
कनक शशि अनिल

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि अनिल

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर: 10107770248
IFSC कोड: SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

अल्तामिरा की गुफा का रंगीन चित्र

Public Domain, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=634374

चित्रकला के इर्दगिर्द -1

सी.एन. सुब्रह्मण्यम्

आज से लगभग सौ वर्ष (1879) पहले की बात है। उन दिनों सबसे पुराने समय के मानवों के बारे में खोज हो रही थी। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में, गुफाओं में खुदाई करने से इस बात के सबूत मिले थे कि सबसे पुराने मानव गुफाओं में ही रहते थे। वे पत्थर के औज़ार बनाते थे और जानवरों का शिकार करके खाते थे।

यह हज़ारों साल पहले की बात है। उन्हें 'गुफा मानव' कहा जाने लगा। लोग सोचते थे कि गुफा मानव का सारा समय जानवरों की तरह बीतता था – शिकार करना, उसे खाना और सो जाना। फिर वही क्रम! बस! लोग यह भी सोचते थे कि गुफा मानव में बहुत कम बुद्धि थी, इसलिए वह कुछ और सोच या कर ही नहीं पाता था।

लेकिन स्पेन की एक बारह साल की लड़की की खोज ने लोगों के इस विचार को गलत साबित कर दिया। मारिया नाम की यह लड़की एक बड़े ज़मींदार की बेटी थी। मारिया के पिता को गुफा मानव के बारे में जानने की बड़ी जिज्ञासा थी। उनके गाँव के पास एक बहुत बड़ी गुफा थी। उस गुफा में उन्हें मानव की हड्डियाँ और पत्थर के औज़ार मिले थे। मारिया के पिता पिछले कई वर्षों से इनका अध्ययन कर रहे थे।

एक दिन मारिया ने ज़िद पकड़ ली कि वह भी गुफा देखने जाएगी। पिता ने लाख मना किया। तरह-तरह से डराया कि वहाँ बहुत अँधेरा है, साँप-बिच्छु होंगे। गुफा में भटक जाओगी तो मिलना मुश्किल हो जाएगा। पर मारिया ने अपनी ज़िद नहीं छोड़ी। आखिरकार पिता को उसे अपने साथ ले ही जाना पड़ा।

गुफा में बहुत अँधेरा था। उजाले के लिए बस एक लालटेन भर साथ में थी। मारिया के पिता गुफा की ज़मीन को खुरच-खुरचकर हड्डियाँ बीन रहे थे। मारिया आसपास घूम रही थी। वह उबने लगी थी। मगर पिता से कैसे कहे, वे नाराज़ हो जाएँगे। थककर मारिया एक जगह लेट गई। कुछ देर बाद उसकी नज़र छत पर गई तो उसे रंग-बिरंगे जानवर दिखे। उसने सोचा कि कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही हूँ। उसने अपनी आँखें मसलीं। नहीं, वह तो जाग रही थी। मारिया चिल्ला उठी, "पापा, पापा देखो कितने सारे चित्र। भैंसों के चित्र!"

पर उसके पिता तो हड्डियाँ खोदने में मग्न थे। उन्होंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और कहा, "हाँ, हाँ अँधेरे में ऐसा ही दिखता है।" मगर मारिया उन्हें खींच लाई और चित्रों से भरी गुफा की छत दिखाई। पिताजी दंग रह गए। इतने बड़े, इतने सुन्दर और रंगीन चित्र। ऐसे लग रहा था मानो जीते-जागते जानवरों का कारवां (झुण्ड) कहीं जा रहा है।

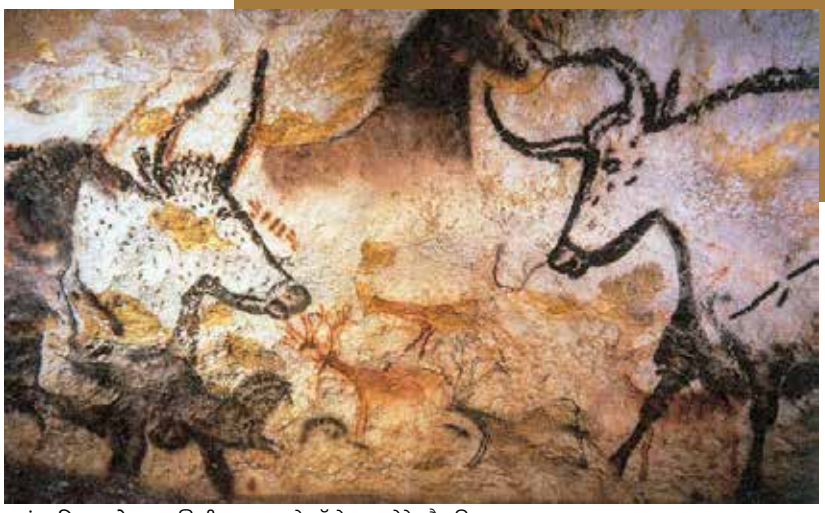

वास्तव में यह मारिया की खोज थी। जिस गुफा मानव को सब मन्द बुद्धि का मानते थे, उन्होंने ऐसे अद्‌भुत चित्र बनाए और वह भी आज से कोई पन्द्रह-बीस हज़ार वर्ष पहले! यह कैसा चमत्कार है। शुरू में तो लोगों ने इस बात को मानने से इन्कार दिया कि ये चित्र गुफा मानव के बनाए हैं। धीरे-धीरे बहुत से और ऐसे चित्र मिले। तब यह स्वीकार करना ही पड़ा।

अब गुफा मानव के बारे में लोगों के विचार भी बदल गए हैं। गुफा मानव जंगली और बुद्धिहीन नहीं, बल्कि सृजनात्मक कलाप्रेमी मनुष्य था। उसने अपने आसपास की दुनिया को बारीकी से देखा। जानवरों को चलते-रुकते, बैठते-दौड़ते और तीरों का शिकार होकर मरते देखा और फिर उनके हूबहू चित्र बनाए।

जानवरों के हूबहू चित्र बनाना यूरोप के प्राचीन गुफा मानव की विशेषता थी। जैसा जानवर दिखा, उसने जो प्रभाव और छाप गुफा मानव पर छोड़ी, गुफा मानव ने बिलकुल वैसा ही चित्रित करने की कोशिश की। इस तरह के चित्रण को यथार्थवादी चित्रण (यथार्थ यानी जैसा है वैसा) या छापवादी चित्रण कहते हैं।

फ्रांस की लास्को गुफा की दीवार पर बने ऑरोक्स, घोड़े और हिरन।
Public Domain, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=2846254

बेशक इन चित्रों से यह तो साबित हो गया कि हज़ारों साल पहले का गुफा मानव बुद्धि और कलाकारी में हमसे कम नहीं था। लेकिन इसके साथ ही कई प्रश्न खड़े हो गए। मसलन, जंगली जानवरों का शिकार करके पेट भरने वाले ये लोग (जिनका बाकी समय भी जानवरों का पीछा करने में बीतता था) आखिर गुफाओं की दीवार पर चित्र क्यों बनाते थे? क्या वे दीवारों को सजाते थे? या इन चित्रों का सम्बन्ध उनकी धार्मिक मान्यताओं से था? कहीं ये चित्र उनके विचारों को व्यक्त करने का तरीका तो नहीं थे? कहीं....

इन सब सवालों पर अगले अंकों में विस्तार से बात करेंगे। तब तक तुम भी सोचो।

अल्तामिरा संग्रहालय और डी. रोड्रीगेज़, CC BY-SA 3.0, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=24512679

अमूर फाल्कन
एक शानदार प्रवासी पक्षी

पीयूष सेकसरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन

फोटो: ©रामकी श्रीनिवासन/कन्ज़र्वेशन इंडिया

अमूर फाल्कन छोटा लेकिन बहुत सुन्दर शिकारी पक्षी है। इसकी प्रवास यात्रा पक्षी जगत की सबसे अद्भुत यात्राओं में से एक मानी जाती है। दक्षिण-पूर्वी साइबेरिया और उत्तरी चीन में प्रजनन के बाद ये बड़े झुण्डों में उड़ान भरते हैं। फिर उत्तर-पूर्व भारत के कुछ स्थानों पर लाखों की संख्या में रुकते हैं। यहाँ ये एक महीने से भी अधिक समय तक ठहरते हैं। इस दौरान ये कीड़े-मकोड़ों और लार्वा को खाकर खुद को मोटा-ताज़ा करते हैं। इसके बाद फिर उड़ान भरते हैं।

उत्तर-पूर्वी हवाओं का फायदा उठाकर कुछ अमूर फाल्कन पूरे भारतीय उपमहाद्वीप और अरब सागर को बिना रुके पार कर लेते हैं। और सीधे अफ्रीका के पूर्वी तट पर पहुँचते हैं। कुछ अन्य भारत के अलग-अलग हिस्सों में रुकते हुए पश्चिमी तट तक पहुँचते हैं। यहाँ से वे फिर उन्हीं उत्तर-पूर्वी हवाओं का सहारा लेकर अरब सागर पार करते हैं।

पूर्वी अफ्रीका पहुँचने के बाद ये धीरे-धीरे और लगातार अफ्रीकी उपमहाद्वीप के दक्षिण-पूर्वी हिस्सों की ओर बढ़ते हैं। सर्दियों में यहीं इनका ठिकाना होता है। कुछ समय रहने के बाद ये अगले साल वसन्त ऋतु में लौटते हैं। वापिसी के लिए ये अलग और ज़्यादा उत्तरी रास्ता अपनाते हैं। अरब सागर के किनारे-किनारे उड़ते हुए ये भारत के ऊपर से गुज़रते हैं, फिर अपने प्रजनन क्षेत्रों तक पहुँचते हैं। इस तरह ये दुनिया के एक बड़े हिस्से का चक्कर लगाते हैं!

काली शुरुआत, उजला मोड़

तुम सोच रहे होगे कि हमें यह सब कैसे पता चला? इसकी शुरुआत एक बेहद काले अध्याय से होती है। नागालैंड के वोखा ज़िले में दोयांग जलाशय के पास अमूर फाल्कन हर साल लाखों की संख्या में इकट्ठा होते। लगभग एक महीने तक वे यहीं रहते। यहाँ उन्हें भरपूर भोजन मिलता और

फोटो: ©रामकी श्रीनिवासन/कन्ज़र्वेशन इंडिया

चित्र 1. संरक्षण से पहले अमूर फाल्कन का शिकार करके लौटते स्थानीय लोग।

आराम के लिए जगह भी। लेकिन यहीं उनका बड़े पैमाने पर शिकार भी हो रहा था। इत्तेफाक से साल 2012 में यह बात शशांक डालवी, रामकी श्रीनिवासन और बानो हरालु को पता चल गई। इतने बड़े पैमाने पर अमूर फाल्कन की हत्या देखकर वे तीनों हैरान रह गए। उनका अनुमान था कि एक महीने में केवल इसी जगह पर लगभग सवा लाख से डेढ़ लाख पक्षियों को मारा जा रहा था।

पहले अमूर फाल्कन का मांस स्वादिष्ट या शुभ नहीं माना जाता था। इसलिए उन्हें मारा नहीं जाता था। लेकिन 2005 के बाद इनका शिकार शुरू हो गया। धीरे-धीरे यह कई परिवारों के लिए मौसमी आय का एक अहम स्रोत बन गया।

इससे जुड़े वीडियो, तस्वीरें और लेख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया तक पहुँचे। बानो हरालु ने नागालैंड के नेताओं, सरकारी अफसरों और स्थानीय समुदायों का ध्यान इस ओर खींचने में अहम भूमिका निभाई। जल्द ही अमूर फाल्कन के शिकार पर रोक लगा दी गई। शुरू में लोगों ने इसका विरोध किया क्योंकि यह उनकी आजीविका से जुड़ा था। कई लोगों को तो भरोसा था कि शिकार बन्द नहीं होगा। लेकिन आखिरकार शिकार बन्द हो गया।

इसके बाद अमूर फाल्कन में लोगों की दिलचस्पी बढ़ी। कई स्थानीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठन इन्हें बचाने की मुहिम से जुड़े। वाइल्डलाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया (WII) ने नागालैंड राज्य वन विभाग, रैप्टर्स एमओयू और रेड-फुटेड फाल्कन पर काम कर चुके हंगेरियन पक्षी वैज्ञानिकों के साथ मिलकर एक परियोजना शुरू की। इसके तहत अमूर फाल्कन के शरीर पर छोटा-सा सैटेलाइट टैग लगाया गया ताकि सैटेलाइट की मदद से उसकी उड़ान ट्रैक की जा सके।

कई कोशिशों के बाद दोयांग में जाल (mist net) की मदद से 30 अमूर फाल्कन पकड़े गए। इनमें से अच्छे पंखों और अच्छी सेहत वाले तीन पक्षियों को चुना गया। नर पक्षी का नाम नागा (नागालैंड के सम्मान में), एक मादा का नाम वोखा (ज़िले के नाम पर) और दूसरी मादा का नाम पंगती रखा गया – पंगती गाँव के लोगों द्वारा इन पक्षियों की रक्षा के प्रयासों के सम्मान में। इन तीनों को ट्रांसमीटर लगाए गए। इनके बाएँ पैर में बीएनएचएस (बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी) की धातु की रिंग और दाएँ पैर में रंगीन प्लास्टिक की रिंग पहनाई गई। और 7 नवम्बर 2013 की सुबह इन्हें छोड़ दिया गया।

फोटो: ©रामकी श्रीनिवासन/कन्ज़र्वेशन इंडिया

चित्र 2. अमूर फाल्कन के संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने की तैयारी करते बच्चे।

फोटो: डॉ. सुरेश, वाइल्डलाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया

चित्र 3. नवम्बर 2025 में टैग किया गया एक अमूर फाल्कन।

ट्रांसमीटर कैसे काम करते हैं?

ट्रांसमीटर का वज़न लगभग 5 ग्राम होता है। इससे पक्षी को इसका भार महसूस नहीं होता। लेकिन इसकी बैटरी बहुत छोटी होती है। ये जल्दी खत्म न हो इसके लिए ट्रांसमीटर में आकाश की ओर मुँह किए हुए एक छोटा सोलर पैनल लगाया जाता है। यह बैटरी को चार्ज करता रहता है। एक एंटीना ट्रांसमीटर के पीछे की ओर निकला होता है, ताकि पक्षी के शरीर को कोई परेशानी न हो – खासकर पूँछ और पंखों को।

अमूर फाल्कन पर रेडियो ट्रांसमीटर को सही ढंग से लगाना बेहद महत्वपूर्ण है। यदि इसे ठीक से न लगाया जाए तो थोड़े ही समय में पक्षी घायल हो सकता है या उसकी मृत्यु भी हो सकती है। या हो सकता है कि उसका व्यवहार इतना बदल जाए कि उससे एकत्र किया गया डेटा बेकार हो जाए। कई प्रयोगों और गलतियों के बाद वैज्ञानिकों ने 'फिगर-8' विधि निकाली। इसमें टैग को टेफ्लॉन हार्नेस से पक्षी की पीठ पर और पंखों के चारों ओर सुरक्षित रूप से बाँधा जाता है। यदि पक्षी को सँभालने का अभ्यास हो, तो फिगर-8 हार्नेस वाले ट्रांसमीटर को सैकंडों में लगाया जा सकता है।

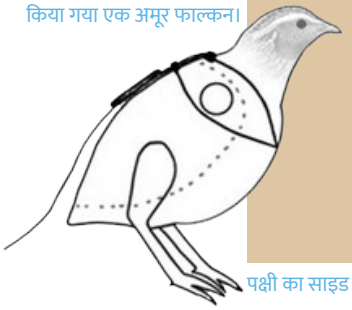

पक्षी का साइड व्यू, जिसमें हार्नेस और ट्रांसमीटर की स्थिति दिखाई गई है।

10 नवम्बर को सबसे पहले पंगती रवाना हुई। 11 नवम्बर को नागा और 13 नवम्बर को वोखा ने उड़ान भरी। तीनों की यात्राएँ रोचक हैं। लेकिन नागा की यात्रा सबसे ज़्यादा अद्भुत रही।

नागा की अद्भुत यात्रा

नागा ने मिज़ोरम-त्रिपुरा बॉर्डर की पहाड़ियों में एक रात बिताई। फिर वो एक पूरा दिन बिना रुके बांग्लादेश और बंगाल की खाड़ी के ऊपर से उड़ता रहा। मछलीपट्टनम के दक्षिण में कृष्णा नदी डेल्टा के पास उसने फिर भारत में प्रवेश किया और बिना रुके उड़ते हुए पणजी (गोवा) के दक्षिण में अरब सागर के ऊपर पहुँचा। 16 नवम्बर की सुबह वह सोमालिया के उत्तरी अफ्रीकी तट पर पहुँचा। नागा ने लगातार 5 दिन और 10 घण्टे (130 घण्टे) तक उड़ान भरी और लगभग 5,600 किलोमीटर की दूरी तय की।

अफ्रीका पहुँचने के बाद नागा ने रुक-रुककर यात्रा की। 25 दिसम्बर तक तीनों पक्षी दक्षिणी अफ्रीका के बोत्सवाना में अपने सर्दियों के ठिकाने पर पहुँच गए। 68 दिनों तक नागा वहीं रहा। फिर 21 मार्च 2014 को उसने वापसी यात्रा शुरू की। 16 दिनों में वह सोमालिया पहुँचा। कुछ दिन वहीं रुका। फिर 18 अप्रैल को बिना रुके अरब सागर को पार करके वह भारत पहुँचा। इसके बाद मणिपुर के रास्ते उड़ते हुए वह उत्तरी म्यांमार में एक रात रुका।

7 मई को नागा अपने सम्भावित प्रजनन स्थल पर पहुँचा। यह बीजिंग से लगभग 500 किमी उत्तर-पश्चिम में है। उसने सोमालिया के तट से यहाँ तक नौ हज़ार किलोमीटर की दूरी तय की। नागा को कुल 1,117 दिनों तक ट्रैक किया गया। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड था। इसके बाद 2018, 2019 और 2023 में भी अमूर फाल्कन को टैग किया गया। सबसे हालिया टैगिंग 8 नवम्बर 2024 को मणिपुर के तमेंगलोंग ज़िले में की गई। यहाँ चिउलुआन-2 और ग्वांग्राम नाम के दो अमूर फाल्कन को जियो-टैग किया गया। टैग किए गए सभी पक्षियों के रास्तों में काफी समानता पाई गई।

उड़ान के पीछे का विज्ञान

इन यात्राओं को देखकर मेरे मन में कुछ सवाल उठे। जैसे कि अमूर फाल्कन यही रास्ता क्यों चुनते हैं? भारत के गोवा-महाराष्ट्र-गुजरात तट से होकर ही क्यों जाते हैं? और वापसी में अरब सागर के

उत्तरी किनारे से अलग रास्ता क्यों लेते हैं? इनका जवाब पता करने के लिए मैंने अमूर फाल्कन का अध्ययन करने वाली टीम के प्रमुख डॉ. सुरेश कुमार से सम्पर्क किया।

उन्होंने बताया कि इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। भारत का पश्चिमी तट पूर्वी अफ्रीका के तट से लगभग 3,500 किलोमीटर दूर है। यह समुद्र के ऊपर की सबसे कम दूरियों में से एक है। इसके अलावा, नवम्बर-दिसम्बर में उत्तर-पूर्वी मानसूनी हवाएँ भारत से अफ्रीका की ओर चलती हैं। वापसी के समय, मार्च में, ये पक्षी अरब सागर के उत्तरी किनारे पर बहने वाली पश्चिमी हवाओं का फायदा उठाते हैं। वास्तव में ये पक्षी अनुकूल हवाओं के सहारे उड़ते हैं।

जैसे कि नागा ने भारत से अफ्रीकी तट तक औसतन 40 किमी/घण्टे की रफ्तार से उड़ान भरी। उसने लगभग 20 किमी/घण्टा की रफ्तार से बहने वाली उत्तर-पूर्वी हवाओं का चतुराई से लाभ उठाया। इससे उसकी मेहनत काफी कम हो गई।

डॉ. सुरेश का यह भी कहना है कि ये क्षेत्र और रास्ते प्रवासी पक्षियों के लिए बहुत अहम हैं। और इन्हें अभी तक अपेक्षित पहचान और संरक्षण नहीं मिला है।

अमूर फाल्कन दुनिया भर में सबसे लम्बी दूरी तय करने वाले शिकारी पक्षी हैं। हर साल ये भरपूर भोजन वाले स्थानों, प्राकृतिक हवाओं और अन्य अज्ञात कारणों का फायदा उठाते हुए 20,000 किमी से भी अधिक उड़ान भरते हैं। ये मंचूरिया से उत्तर-पूर्व भारत, अफ्रीका जाते हैं और वापस आते हैं। इस दौरान ये 20 से अधिक देशों से गुज़रते हैं।

इनके संरक्षण की कहानी दिखाती है कि वैज्ञानिक अनुसन्धान, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और वैश्विक समर्थन कितना प्रभाव डाल सकते हैं। शिकारी से संरक्षणकर्मी बनने तक, दूर-दराज़ के गाँवों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता तक ये छोटे पक्षी अपनी दृढ़ता और असाधारण यात्रा से लोगों को चकित कर देते हैं।

इनकी उड़ान यह भी याद दिलाती है कि प्रवासी प्रजातियों की सुरक्षा के लिए संरक्षण के लगातार प्रयास और स्थानीय सहभागिता कितनी ज़रूरी है।

चित्र 4. 20 नवम्बर, 2025 तक तीन अमूर फॉल्कन की उड़ान के रास्ते।

फोटो: डॉ. सुरेश, वाइल्डलाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया

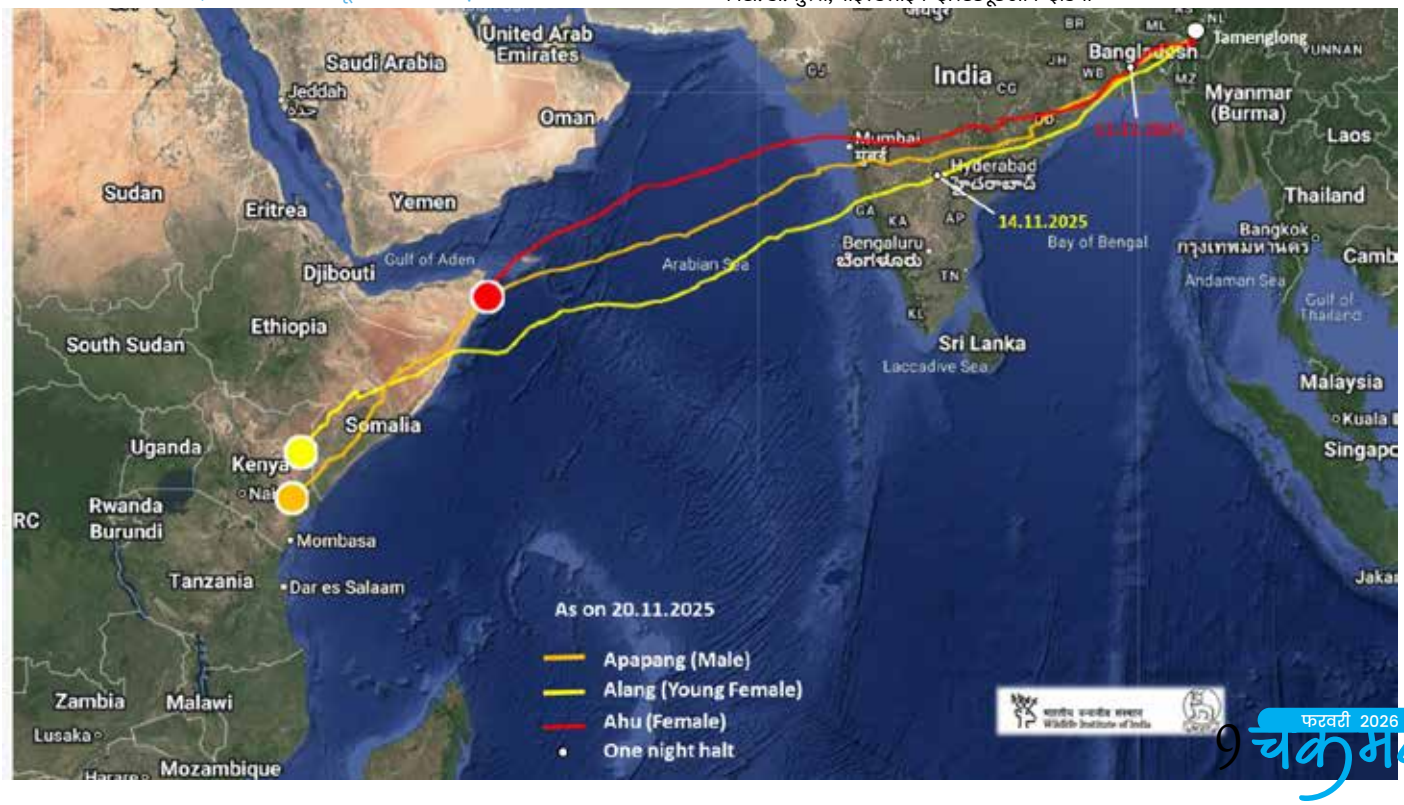

गणित है मज़ेदार

गॉस की कहानी

आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी
चित्र: मधुश्री

यदि तुम्हें 1 से 100 तक की संख्याओं का योगफल निकालना हो तो इसमें कितना समय लगेगा? शायद, काफी ज़्यादा। नहीं?

एक बार पाँचवीं कक्षा के कुछ बच्चों से यही सवाल पूछा गया। शिक्षक को लगा था कि इसका जवाब निकालने में बच्चों को काफी समय लगेगा।

लेकिन एक बच्चे ने तुरन्त ही जवाब दिया...

यदि तुम चाहो तो जाँचकर देख लो कि उसका जवाब सही है या नहीं।

फिलहाल हम देखते हैं कि उस बच्चे ने इतनी जल्दी जवाब कैसे निकाला।

सवाल था:

1 + 2 + 3 + 4 + ... + 97 + 98 + 99 + 100 = ?

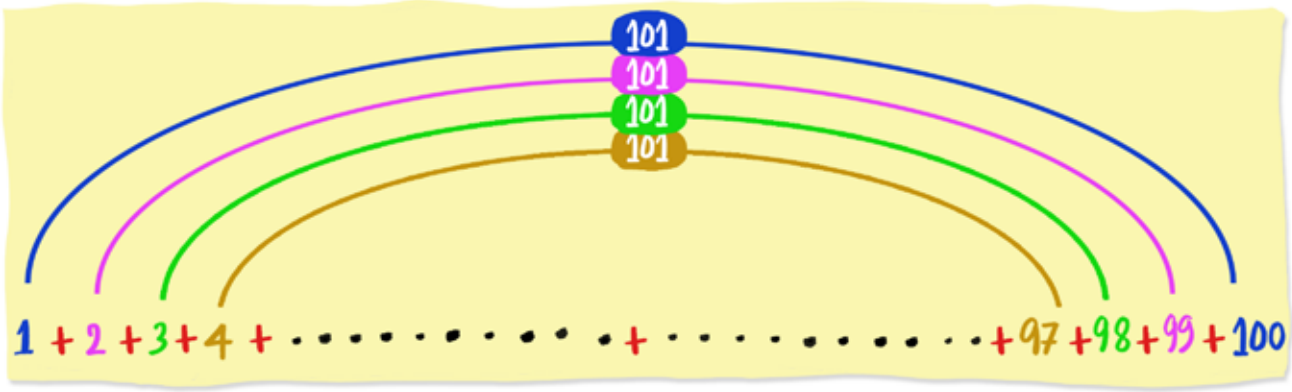

उसने ऐसी 50 जोड़ियाँ पता की जिनका योगफल 101 है। इसलिए जवाब हुआ

50 x 101 = 5050

उस बच्चे का नाम था **कार्ल फ्रेडरिक गॉस** (1777-1855, जर्मनी)।
यह आज से कुछ चार सौ साल पहले की बात है।
बाद में वह बच्चा **महान गणितज्ञ** बना।

चलो, देखते हैं गॉस का यह तरीका छोटी संख्याओं के लिए काम करता है या नहीं।

पहले 10 तक की सभी संख्याओं का योगफल निकालते हैं...

तो हमें 11 योगफल वाली 5 जोड़ियाँ मिलती हैं और **कुल योगफल होता है 55।**

अब इसी सवाल को दूसरी तरह से देखते हैं - मोतियों के साथ :

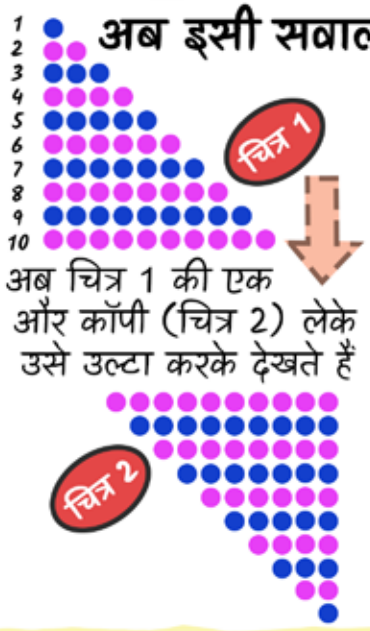

अब चित्र 1 की एक और कॉपी (चित्र 2) लेके उसे उल्टा करके देखते हैं

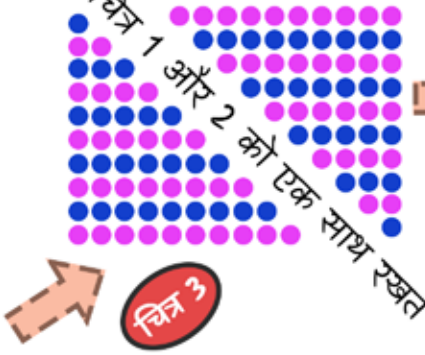

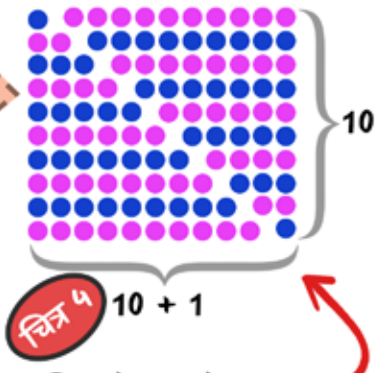

हरेक पंक्ति में हमारे पास 10 + 1 यानी कि 11 मोती हैं।

और ऐसी कितनी पंक्तियाँ हैं?

चित्र 4 में ऐसी पंक्तियों की संख्या हैं 10,
तो मोतियों की संख्या हुई 10 x 11 = 110।

लेकिन चित्र 1, 2, 3 से पता चलता है कि चित्र 4 में हमने चित्र 1 के त्रिभुज को ही दो बार इस्तेमाल किया है। तो चित्र 1 में कितने मोती हुए?
10 x 11 के आधे, यानी 55, नहीं?

क्या होगा यदि चित्र 1 की आखिरी पंक्ति में मोतियों की संख्या 101 हो तो?

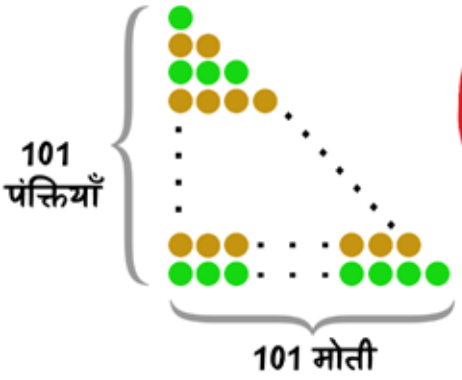

चलो, अब हम 1 से n तक की क्रमागत संख्याओं (consecutive numbers) के जोड़ के सवालों को हल करने के लिए एक नया तरीका आज़माते हैं। यहाँ n कोई भी प्राकृत संख्या हो सकती है।

कॉलम 1	कॉलम 2	कॉलम 3	कॉलम 4
n	n+1	n(n+1)	?
1	2	2	1
4	5	20	10
7	8	56	28
10	11	110	55
32	33	1056	528
101	102	10302	5151
200	201	40200	20100

क्या तुम्हें कॉलम 3 और कॉलम 4 में कोई सम्बन्ध दिखाई देता है?

तालिका देखकर तुम समझ गए होगे कि

1 से n तक की क्रमागत संख्याओं का जोड़ निकालने का यह आसान तरीका है कि n व n+1 को गुणा करो और गुणनफल को आधा कर दो।

क्या इस तरीके का इस्तेमाल करके हम किसी भी संख्या से शुरू करके n तक का योगफल पता कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, हमें 1 से 100 तक का योगफल पता है तो क्या हम 27 से 100 तक योगफल पता कर सकते हैं? **करके देखो!**

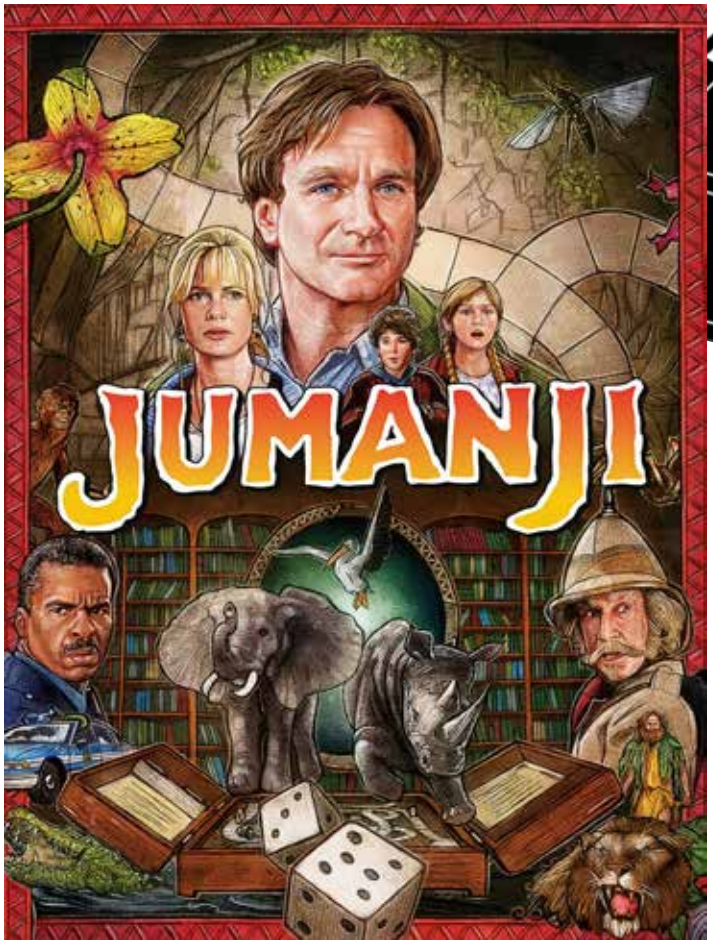

जुमांजी

निर्देशक: जोए जॉन्सटन
रिलीज़: 1995

आदित्य राज
ग्यारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

जुमांजी मज़ेदार, रोचक और एडवेंचर्स फिल्म है। फिल्म की शुरुआत में एलन को एक बॉक्स मिलता है। उसके ऊपर लिखा होता है जुमांजी। जुमांजी एक प्रकार का खेल होता है जो जंगल की दुनिया को हकीकत की दुनिया से जोड़ता है। एलन अपनी एक दोस्त के साथ यह खेल खेलता है। शुरुआत में दोनों को सब ठीक ही लगता है। लेकिन जब एलन अपनी गोटियाँ फेंकता है तो वह खुद खेल के अन्दर चला जाता है। यह देखकर उसकी दोस्त हैरान होती है और घर से भाग जाती है। फिर वो खेल बन्द हो जाता है।

फिर 26 साल बाद एक भाई-बहन को जुमांजी वाला वो बॉक्स मिलता है। वो दोनों भी खेलने लगते हैं। हर पड़ाव पर अलग-अलग जंगली जानवर बाहर आते हैं। पहले शेर, फिर शैतान बन्दर, बड़े मच्छर और फिर एलन आता है। एक जंगली आदमी के रूप में उसे देखकर दोनों बच्चे डर जाते हैं। बाद में एलन जुमांजी के बारे में उन्हें बताता है और अपनी दोस्त को ढूँढता है। अन्त में चारों मिलकर कोई खेल पूरा करते हैं। इस खेल में उन्हें कई जानलेवा खतरों और जंगली जानवरों का सामना करना पड़ता है।

इस फिल्म में सिर्फ रोमांच ही नहीं है, बल्कि और भी कई चीज़ें देखने को मिलती हैं। कैसे एलन पूरे 26 साल खेल में कैद रहा और जंगली जानवरों से खुद को बचाते हुए उन्हें हराने के तरीके ढूँढता रहा। कैसे मनुष्य कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी खुद को ढाल लेता है। अपने जीवन यापन के तरीके ढूँढ लेता है। यह चीज़ हमें इस फिल्म में देखने को भले ही नहीं मिली हो, पर हम इसे समझ सकते हैं। हमें देखने को मिलता है कि कैसे वह दोनों छोटे बच्चे भी सहजता और बहादुरी से खेल को पूरा करते हैं। यह फिल्म हास्य और रोमांच से भरी हुई है। इस खेल पर दो और फिल्में बनी हैं, जिनमें खेल को वीडियो गेम के माध्यम से दिखाया गया है। ये भी बहुत मज़ेदार है।

भाग - 18

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेश्मू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ

रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

बिटर वाइन

वैज्ञानिक नाम: *माइकेनिया माइक्रैंथा* (*Mikania micrantha*)

मूल: मध्य एवं दक्षिण अमेरिका

कैसे पहुँचा: मूलत: भारत में चाय के बागानों में ज़मीन ढँकने (ग्राउंड कवर) के लिए लाया गया था। कुछ विवरणों में यह भी कहा गया है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हवाई पट्टियों को छिपाने (कैमोफ्लाज) के लिए इसे लाया गया।

यह तेज़ी से बढ़ने वाली एक बेल है। इसे माइल अ मिनट वीड के नाम से भी जाना जाता है। नम उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में यह लगभग 800 मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती है। इसमें छोटे हरे-सफेद फूल होते हैं, जो गुच्छों में लगते हैं। इसके काले बीज पाँच कोणों वाले होते हैं, जिन पर सफेद रोएँदार संरचनाएँ होती हैं। इसके बीज हवा के ज़रिए फैलते हैं।

इसके पत्ते दिल के आकार के होते हैं और टहनियों वाले पतले तने पर आमने-सामने जोड़ियों में लगे होते हैं। यह अमूमन सड़कों के किनारे, नदी-नालों के तटों पर, परती ज़मीन (खेती की ज़मीन जिसे कुछ समय के लिए बिना बोए छोड़ा जाता है), फसलों वाले खेतों और यहाँ तक कि पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित जंगलों (disturbed forests) में भी पाया जाता है।

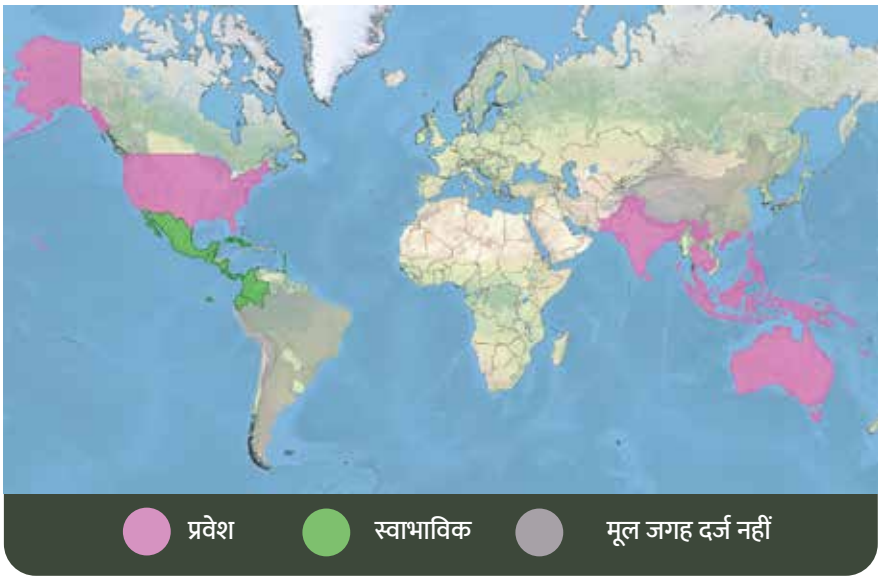

असर

यह बेल बहुत तेज़ी से बढ़ती है और स्थानीय वनस्पतियों को ढँककर दबा देती है। इससे उनका विकास रुक जाता है। इसके तेज़ी से फैलने के कारण एक सींग वाले गैंडे का प्राकृतवास काफी घट गया है और बिगड़ भी गया है। यह कई रोपी जाने वाली फसलों, बागवानी और पेड़ों की फसलों की पैदावार भी कम कर देता है।

बन्दोबस्त

इस पौधे को हटाने का सबसे असरदार तरीका इसे हाथ से उखाड़ना माना गया है। इसके अलावा *Puccinia spegazzinii* नामक एक प्रकार की फफूँद से किया गया जैविक नियंत्रण भी कारगर रहा है।

पीछे छूटा हुआ भाई

रिनचिन
चित्र: शिवांगी सिंह
अनुवाद: कविता तिवारी

कॉलेज से घर पहुँचते ही प्रीति सीधे रसोई में गई। तीन गिलास पानी गटकने के बाद बाहर आते हुए बोली, “भाई कहाँ है?”

“चाचा उसे साथ ले गए हैं, वकील के पास। रात तक आ जाएगा।” माँ बोलीं।

“तभी मैं सोचूँ कि आज रिमोट तुम्हारे हाथ में कैसे आ गया।”

“जा हाथ-मुँह धोकर खाना खा ले। केवल पानी से तो तेरा पेट भरेगा नहीं!” टीवी से नज़रें हटाते हुए माँ ने कहा।

“तुम्हें कैसे पता मैं पानी पी रही थी?”

“सुना मैंने। गटागट-गटागट। पूरे दिन पानी नहीं मिलता क्या?”

“अरे, अभी तक मुझे पता नहीं चला कि यूनिवर्सिटी में साफ-सुथरा गर्ल्स टॉयलेट कहाँ है। इसलिए मैं सुबह ज़्यादा पानी नहीं पीती, बार-बार जाना पड़े तो?” कहते हुए प्रीति वॉश बेसिन की ओर चल दी।

वो हाथ धो रही थी कि तभी उसका फोन बजा।

जब वह अन्दर आई तो माँ ने पूछा, “क्या हुआ?” “अरे, मीनू के मम्मी-पापा उसे नाटक देखने के लिए आने नहीं दे रहे हैं। कह रहे हैं कि वो जगह बहुत दूर है और लड़कियों का इतनी दूर अकेले जाना ठीक नहीं। उन्हें ये डर भी है कि वहाँ जाने कैसे-कैसे लोग आएँगे।” प्रीति माँ की ओर देखते हुई बोली, “शुक्र है कि तुम उन जैसी नहीं हो।”

"मस्का मत लगा!" माँ मुस्कराते हुए बोलीं। "वैसे मुझे भी तुम्हारा ये अकेले जाने का आइडिया कुछ खास जम नहीं रहा है।"

"क्यों? बहुत ही बढ़िया नाटक है माँ। मैम कह रही थीं कि हमें हर हाल में इसे देखना चाहिए। फिर मौका मिले, ना मिले।"

"तो फिर मैम खुद क्यों नहीं ले जातीं तुम्हें?"

"हमें ले जाना उनका काम नहीं है माँ! पर मैम भी वहाँ आएँगी। अब छोड़ो भी, कल तो तुमने हाँ कह दिया था ना? अब तुम मना नहीं कर सकतीं।" खाना खत्म कर प्रीति प्लेट उठाकर गैलरी में गई और नल खोलकर बरतन साफ करने लगी।

तभी अन्दर से माँ की आवाज़ आई, "वापिस कितने बजे तक आओगी?"

"अरे, बोला तो नौ बजे तक आ जाएँगे। प्लीज़ मम्मी, अब तुम मत शुरू हो जाओ।" माँजने से पहले प्रीति एक-एक कर बरतनों को पानी से खँगाल रही थी।

"मैं प्रणव को बोलूँ? वो ले जाएगा तुम लोगों को।"

"पर क्या वो आएगा?" प्रेशर कुकर में पानी भरकर उसे भीगने के लिए रखते हुए प्रीति ने पूछा। उसे वह आखिर में साफ करेगी। मन ही मन वह हिसाब लगाने लगी कि अगर भाई साथ चलता है तो मीनू के मम्मी-पापा उसे भेजने के लिए राज़ी हो जाएँगे और फिर जल्दी घर लौटने का झंझट भी नहीं होगा। और नाटक के बाद थोड़ी देर रुककर वे कलाकार वगैरह से मिल भी सकते हैं।

"उसे साथ ले जाओ, इस बहाने वो भी घूम लेगा। बोर होता है पूरा दिन घर पर अकेले। उसके कोई यार-दोस्त भी तो नहीं हैं यहाँ।" माँ ने आगे कहा। पिछले पाँच सालों से उसका भाई घर से बाहर था। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के सिलसिले में। और अब बेंगलुरु के पास किसी जगह अपनी फाइनल इंटर्नशिप कर रहा था। अभी कुछ दिनों के लिए घर आया था क्योंकि जायदाद के कागज़ातों पर चाचा को उसके दस्तखत चाहिए थे।

"ठीक है। वो बोर हो रहा है तो चले हमारे साथ। पर हम अकेले भी जा सकते हैं।"

"हाँ भई, जा तो तुम लोग कहीं भी सकते हो। पर कोई साथ हो तो अच्छा ही है।"

"मीनू और प्रेमा हैं तो साथ।"

"तू जानती है ना मेरे कहने का मतलब।" माँ ने कहा। "वैसे भी कभी रोका है तुझे? पूरी आज़ादी दे रखी है। सब कुछ तो करने देती हूँ।"

"आज़ादी दी है," सुनकर प्रीति ने मुँह बनाया। इन शब्दों से उसे हमेशा ही बहुत चिढ़ होती। लेकिन उसने कुछ कहा नहीं।

फिर यह सोचकर उसे अच्छा लगने लगा कि भाई भी नाटक देखने आ रहा है। इससे उन्हें साथ में समय बिताने का मौका मिलेगा। वैसे भी इन दिनों उसे अपने भाई से थोड़ी दूरी महसूस हो रही थी। दोस्तों के बीच भाई का होना उसे अच्छा लगेगा। साथ में नाटक देखते हुए वह भी उसकी दुनिया का हिस्सा बनेगा, जानेगा कि उसे क्या अच्छा लगता है।

यह सब सोचते हुए उसके मन में खुशी की लहर दौड़ गई। उसने तय किया कि वह शीतल को फोन करके एक और टिकट लेने को कह देगी। पैसे तो सुबह भी दिए जा सकते हैं।

प्रीति के दोस्तों को उसका भाई अच्छा लगता था – हँसी-मज़ाक करने वाला। पर पता नहीं क्यों उसे ऐसा लगने लगा था कि जैसे अब भाई की ज़िन्दगी उसकी और माँ की ज़िन्दगी से कुछ अलग हो गई है। तीन साल पहले उनके पापा गुज़र गए थे। उस समय भाई की परीक्षाएँ एकदम सर पर थीं। लेकिन माँ ने पूरा ध्यान रखा कि इससे भाई की पढ़ाई में कोई रुकावट ना आए। रीति-रिवाज़ों को ताक पर रखते हुए माँ ने सारे कर्मकाण्ड तेरह की बजाए चार ही दिनों में पूरे करवा दिए। बाद में पापा के ऑफिस और बैंक से जुड़े सारे कामों को निपटाने में प्रीति ने माँ की मदद की। जब पापा की नौकरी घर के किसी एक व्यक्ति को मिलने की बात आई, तो ये ज़िम्मेदारी भी माँ ने ही सँभाली। इसी से भाई की फीस और घर के दूसरे खर्चे

चलते रहे। प्रीति को कॉलेज से स्कॉलरशिप मिलती थी। जल्दी ही उसे कोचिंग सेंटर में काम भी मिल गया। धीरे-धीरे घर की माली हालत बेहतर होने लगी। अब तो उसका भाई भी थोड़ा कमाने लगा था। माँ उसे कहती रहतीं कि वो अपनी कमाई अपने खर्चों के लिए रखे।

प्रीति की कोचिंग सुबह होती। फिर वह वहीं से सीधे यूनिवर्सिटी चली जाती। उस दिन जब वह घर पहुँची तो भाई रिमोट हाथ में लिए सोफे पर सो रहा था। "ये अभी तक सोया है? अब तक तो तैयार हो जाना चाहिए था। पाँच तो बज ही गए हैं।" उसने माँ से कहा।

"उठाने ही वाली थी। फिर सोचा चाय के साथ उठा दूँगी। तेरे लिए भी बनाई है। तू खाना खाकर तैयार हो, तब तब तक वो भी तैयार हो जाएगा।" जब प्रीति मुँह-हाथ धोकर, कपड़े बदलकर आई तो उसने भाई को चाय पीते देखा। "जाओ, फटाफट तैयार हो। हमें जल्दी निकलना है।" वह बोली।

"चिल्ला क्यों रही है? ऐसी भी क्या जल्दी है?" भाई ने अलसाते हुए कहा और सोफे पर पैर पसारकर बैठ गया।

प्रीति उसे घूरती रही।

"ये इतनी चिड़चिड़ी कब से हो गई है?" उसने मुस्कराते हुए माँ से पूछा। वैसे तो प्रीति को अपना भाई बहुत पसन्द था पर उसकी एक आदत उसे हमेशा खटकती थी – हर काम को अपनी सहूलियत से करना।

खैर, चाय खतम करके भाई तैयार होने चला गया। प्रीति फटाफट खाना गटक रही थी। "जल्दी करो, देर हो जाएगी।" भाई के पास से गुज़रने पर उसने कहा। "ठीक है। इतनी भी क्या जल्दी है, नाटक ही तो है।" प्रीति के गले में बाँहें डालते हुए वो बोला।

"ये कोई ऐसा-वैसा नाटक नहीं, बहुत ही खास नाटक है। जल्दी करो। मैंने प्रेमा को मिस्ड कॉल दे दिया है। वो मीनू के घर के पास हमारा इन्तज़ार कर रही होगी।" दरवाज़े से बाहर निकलते हुए उसने कहा।

भाई बाहर आने में देर कर रहा था। प्रीति इन्तज़ार में थी कि भाई बैठे तो वह स्कूटर स्टार्ट करे।

अब तक प्रीति को लग रहा था कि भाई मज़ाक कर रहा है। लेकिन अब वह समझ गई कि ऐसा नहीं है। खीजकर उसने स्कूटर स्टार्ट की और अकेले ही चल पड़ी।

जो कुछ हुआ उस पर उसे यकीन ही नहीं हो रहा था। उसके मन में आया – शायद वो आना ही नहीं चाहता हो। गुस्से से उसकी आँखें जलने लगीं और फिर आँसू छलक पड़े। गाड़ी चलाने से उसके आँसू उड़कर बालों में समा गए। वह सीधे वहीं रुकी जहाँ मीनू और प्रेमा उसका इन्तज़ार कर रही थीं।

"इतनी देर क्यों हो गई?" प्रेमा ने पूछा।

"और तेरा भाई कहाँ है?" खाली सीट देखते हुए मीनू बोली। धूप में खड़े रहने से उसका चेहरा लाल पड़ गया था। फिर भी प्रीति से उसके चेहरे का मेकअप छिप न पाया।

"मैंने उसे घर पर ही छोड़ दिया।"

"क्या? क्यों?"

"लेकिन मेरी मम्मी तो सोच रही हैं कि वो हमारे साथ आ रहा है, तभी तो उन्होंने मुझे आने दिया।" मीनू अपनी गली की ओर देखते हुए बोली। जैसे वह तय नहीं कर पा रही हो कि अब इन लोगों के साथ जाए या वापस घर चली जाए।

"तो इससे पहले कि उन्हें इस बात की भनक लगे, फटाफट यहाँ से निकलते हैं।" प्रीति हड़बड़ाते हुए बोली। ऑडिटोरियम वाले इलाके में उसका जाना कम ही होता था। इसलिए सड़कें बहुत जानी-पहचानी नहीं थीं और उसका पूरा ध्यान सही जगह मुड़ने पर था।

"पर, हुआ क्या?" प्रेमा ने पूछा जब वे स्कूटर खड़ा कर ऑडिटोरियम की ओर जा रहे थे। "वो स्कूटर में मेरे पीछे बैठना नहीं चाहता था तो मैंने उसे घर पर ही छोड़ दिया, और आ गई।"

"सिर्फ इतनी-सी बात के लिए तूने उसे छोड़ दिया?" मीनू ने पूछा। "मेरी मम्मी क्या कहेंगी जब उन्हें पता चलेगा कि हम अकेले ही गए थे।"

"उन्हें बताने वाला कौन है? तू?" प्रेमा बीच में ही बोल पड़ी। फिर प्रीति की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा, "उसने सच में तेरे पीछे बैठने से मना किया?" प्रीति ने हाँ में सिर हिलाया। यह सोचकर उसे अच्छा नहीं लग रहा था कि उसके भाई को एक लड़की के पीछे बैठना शर्म की बात लग रही थी। उसका भाई इतना दकियानूसी कैसे हो सकता है! यह तो बड़ी बेवकूफी की बात है। ऐसे लड़कों पर तो वो हँसा करती थी और यहाँ खुद उसका भाई ऐसी बात कर रहा है।

ऑडिटोरियम के दरवाज़े पर शीतल पाँच टिकिट लिए खड़ी थी।

"तेरा भाई कहाँ है?" उसने पूछा

"वो तो पीछे छूट गया!" तीनों ने एक सुर में कहा और खी-खी करके हँसने लगीं।

शीतल उन्हें घूरती रही।

"चल पहले अन्दर चलें, फिर बताते हैं।"

"पर इस पाँचवें टिकिट का क्या करें?"

"इसे बेच देते हैं," कहकर प्रेमा टिकिट खिड़की की ओर मुड़ गई। "तुम लोग जाओ और सीट सँभालो।"

"मैं प्रेमा के साथ आऊँगी," कहते हुए प्रीति उसके पीछे भागी।।

"चल, तब तक मैं तुझे सारी कहानी सुनाती हूँ।" मीनू ने ठण्डी साँस भरते हुए कहा।

जब तक प्रीति और प्रेमा वापस आए शीतल प्रीति के पीछे छूटे भाई के बारे में सोचते हुए हँसे जा रही थी।

प्रीति मीनू की बगल में बैठी और फुसफुसाई, “जो भी हुआ उसके लिए सॉरी यार...” वो अपनी हँसी दबाने की कोशिश कर रही थी। मीनू ने उसे देख मुँह बना लिया। “अगर तेरे मम्मी-पापा ने पूछा तो क्या बोलेगी? क्या तू उन्हें बताएगी कि हम अकेले आए थे?”

“नहीं।” मीनू बोली।

“तो तू झूठ बोलेगी?”

“झूठ क्यों बोलूँगी? मैं क्या अकेली आई हूँ? हम चार लोग तो हैं और अगर उन्होंने खास तौर से उसके बारे में पूछा तो कह दूँगी कि कुछ ऐसा हुआ कि वो आ नहीं पाया और मुझे यह बात मालूम नहीं थी। अब इसमें मैं क्या कर सकती थी? बताओ क्या मैं कुछ कर सकती थी?” मीनू की आँखों में थोड़ा गुस्सा था। प्रीति समझ नहीं पा रही थी कि इस गुस्से की वजह उसके माँ-पापा के सख्त नियम-कायदे हैं या फिर उसका भाई को ना लाना।

मीनू उसका हाथ दबाते हुए बोली, “मैनेज कर लेंगे यार। बेकार में चिन्ता मत कर।” ऐसा कहकर वो फिर दबी हँसी हँसने लगी और बोली, “बस अब ये दुआ करो कि लौटते समय कोई हमारा पीछा ना करे। अगर किसी ने घर तक मेरा पीछा किया या कुछ और बुरा हुआ तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।”

“सारी बुरी चीज़ें आज ही होंगी क्या?” शीतल हँसते हुए बोली।

“तू जानती है ना अभी हम सब किस मूड में हैं। अगर लौटने में किसी ने हमें परेशान करने की कोशिश की तो उसकी शामत आ जाएगी।”

घण्टी बजते ही सब चुप हो गए। नाटक शुरू हो गया। धीरे-धीरे वे पूरी तरह नाटक में खो गए। एक खास किरदार निभाने वाले कलाकार से तो प्रीति को रश्क हो रहा था। वह सोच रही थी काश उसकी जगह मैं होती!

कुछ देर के लिए वह अपने पीछे छूटे भाई को भूल गई।

बगल में बैठे दो लड़के इंटरवल के दौरान उनसे थोड़ा दोस्ती करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन लड़कियाँ उनसे सख्ती से पेश आ रही थीं। कौन जाने हँसकर बात करने का लड़के क्या मतलब निकालेंगे! यह बात प्रीति को बहुत बुरी लगती थी कि ऐसे मौकों पर उसे और उसके दोस्तों को हमेशा सर्तक रहना पड़ता है। वह जानती थी कि अपनी बात मनवाने के लिए उन्हें कई तरह के समझौते करने पड़ते हैं। पर उसे उम्मीद थी कि एक दिन ऐसा आएगा जब किसी की मुस्कराहट का जवाब मुस्कराहट से देना या किसी से लिफ्ट लेना मुसीबत को गले लगाना नहीं होगा। और अगर इतना भी हो गया ना तो ज़िन्दगी थोड़ी आसान तो हो ही जाएगी।

नाटक खत्म होने के बाद वे थोड़ी देर उसके बारे में बातें करती रहीं। फिर अपनी क्लास के कुछ और लोगों से मिलीं। प्रीति को कलाकारों से मिलने का मन था। लेकिन मीनू बोली, "यार बहुत टाइम हो गया है। मैं नहीं चाहती कि मम्मी-पापा रास्ते पर खड़े होकर हमारा इन्तज़ार करें और उन्हें पता चले कि हम अकेले गए थे।"

"हाँ यार, चलते हैं।" प्रीति के पीछे बैठते हुए शीतल ने कहा। उसका घर पास ही में था। उसे छोड़ने के बाद प्रीति को बाकी का रास्ता अकेले ही तय करना था। एक मोड़ पर उसने मीनू और प्रेमा को बाय कहा। फिर मीनू बोली, "फोन पर बताना कि घर पर कैसा रहा?" मीनू ने हाँ में सिर हिलाया। अब वो पहले से कुछ कम परेशान लग रही थी।

घर के पास आते ही प्रीति को चिन्ता होने लगी कि माँ क्या कहेंगी। और भाई का सामना भी तो करना पड़ेगा। उससे वह क्या कहेगी? इस झगड़े से उन दोनों के बीच पैदा हुए तनाव को वो अभी से महसूस कर पा रही थी।

"तेरे पीछे बैठना मुझे अच्छा नहीं लगेगा" ये क्या बात हुई भला! ये सोचकर वह खुलकर हँसी और फिर उसने गाड़ी तेज़ कर दी।

दरवाज़ा खोलते ही सबसे पहले भाई दिखा, सोफे पर बैठकर टीवी देखता हुआ। उस पर ध्यान दिए बिना वो सीधे किचन में चली गई। माँ रसोई साफ कर रही थीं। वह माँ की मदद करने लगी।

"रहने दे, पहले खाना खा ले। मैं तेरा ही इन्तज़ार कर रही थी।" माँ ने कहा।

"और वो?" प्रीति ने दूसरे कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"उसने खा लिया।" माँ बोलीं।

"क्या माँ कुछ कहना चाह रही थीं?"

खाना शुरू करते ही माँ नाटक के बारे में पूछने लगीं। भाई चुप रहा। माँ ने उसे बातचीत में शामिल करने की भरपूर कोशिश की, पर वो कुछ नहीं बोला। प्रीति अभी भी माँ के कुछ कहने का इन्तज़ार कर रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि बात को कैसे और कहाँ से शुरू करे, इसलिए वह चुप रही।

आखिर माँ ने पूछ ही लिया, "उस एक्स्ट्रा टिकिट का क्या किया?"

"बेचकर स्कूटर में पेट्रोल भरवा लिया।"

यह सुनकर दोनों ज़ोर से हँस पड़ीं।

	3			2			8	6
		8		9	3			
9		2	8	6	1	3		
2	9	3	1	5			7	8
		5	7		9	2	1	
4	1	7		8		5	3	9
		6		1	5		9	
7	5	1						
		9						

सुडोकू 93

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

चित्र पहेली

1		2		3	4		5	
					6			
		7		8				
	9					10		11
12				13				
			14				15	
16						17		
		18		19	20		21	
22					23			

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

जवाब पेज 42 पर

जमाली-कमाली

वसुन्धरा बहुगुणा
कोलाज: कनक शशि अनिल

दिल्ली के महरौली के दिल में बसी हैं दो बेजोड़ इमारतें – जमाली-कमाली सूफी मस्जिद और मकबरा। कहा जाता है कि दोनों ही इमारतें लगभग सोलहवीं सदी में बनी थीं। लाल पत्थर और सफेद संगमरमर से बनी इन बेहद खूबसूरत इमारतों में समरकन्द की वास्तुकला की प्रभावशाली झलक देखने को मिलती है।

जमाली-कमाली परिसर महरौली आर्कियोलॉजिकल पार्क में स्थित है। कुतुबमीनार से लगभग 400 मीटर दूर। हरे-भरे पेड़ों के बीच खड़ी ये दो आकृतियाँ मानो एक दृश्य रचती हों – एक सीना ताने आसमान को निहारती हुई और दूसरी बाँहें फैलाए किसी के इन्तज़ार में। दोनों ही इमारतें एक छोटी पहाड़ी पर बनी हैं। मकबरे की छत पर जमाली द्वारा लिखी गई कुछ पंक्तियाँ अंकित हैं।

पर ये जमाली-कमाली हैं कौन? कहाँ से आए? किसने बनवाए इनके नाम की मस्जिद और मकबरा? क्या ये कहानियाँ अतीत में ही सिमटी हैं, या आज भी कहीं जीवित हैं?

चलो, देखते हैं।

लोदी और मुगल सल्तनत के दौर में एक सूफी कवि और फकीर हुआ करते थे – शेख फ़ज़लुल्लाह कांबोह। उन्हें जलाल ख़ाँ भी कहा जाता था। उन्हीं को “जमाली” की उपाधि से नवाज़ा गया। सिकन्दर लोदी हों या बाबर और हुमायूँ – तीनों ही जमाली की कला और व्यक्तित्व के कायल थे। कहा जाता है कि बादशाह हुमायूँ के शासनकाल में ही जमाली-कमाली का मकबरा बनकर तैयार हुआ। युग बदले, सल्तनतें बदलीं, पर जमाली का जमाल कायम रहा।

कहते हैं कि जमाली ने खूब यात्राएँ कीं। मध्य एशिया से लेकर मध्य-पूर्व और हिन्दुस्तान तक। सुना है कि वे यरुशलम, स्पेन और न जाने कहाँ-कहाँ गए। अपनी यात्राओं के दौरान उनकी

भाषा में रची गई रचनाएँ आज भी हमारे बीच कैसे और क्यों जीवित हैं। कभी अनुवादों के ज़रिए, कभी किंवदंतियों और कहानियों के रूप में। और शायद इसलिए कि सदियों के साथ-साथ इन्सान व इन्सानियत उतनी नहीं बदली, जितना हम समझते हैं।

क्यों, आपका क्या खयाल है इस बारे में?

बहरहाल, ये तो हुई जमाली की बात। अब ज़रा कमाली की भी चर्चा हो जाए। जमाली-कमाली मस्जिद के पास स्थित मकबरे के परिसर में लगी एक तख्ती पर लिखा है–

"यह प्रसिद्ध सूफी कवि और दरबारी शेख जमाली कांबोह की कब्र है। उनके बगल में किसी कमाली की कब्र है, जिनकी पहचान अज्ञात है।"

लोग कहते हैं, किताबों में दर्ज है और वहाँ का चौकीदार या कोई उत्सुक गाइड भी दबे स्वर में यह कहकर निकल जाता है, "अरे, ये जमाली के प्रेमी थे... या दोस्त... या शायद बेटे। कुछ कहा नहीं जा सकता। कहते हैं कि जमाली और कमाली एक-दूसरे से बेइन्तिहा मोहब्बत करते थे। यह समझना ज़रूरी है कि प्रेम की परिभाषाएँ अनगिनत होती हैं। यदि दो पुरुषों के बीच प्रेम की कल्पना आपको असहज करती है, तो वह आपकी मान्यता हो सकती है। पर अपने मत को सही-गलत का सार्वभौमिक पैमाना बना देना प्रश्नों के घेरे में आता है।

पता नहीं कमाली जमाली के शिष्य थे, सखा थे या फिर केवल उनका सान्निध्य चाहने वाले। कुछ लोग कहते हैं कि कमाली, जमाली का ही दूसरा नाम था। मगर फिर वहाँ दो कब्रें क्यों हैं?

मुलाकात अनगिनत सूफियों, संन्यासियों और राहगीरों से हुई होगी। कमाल की बातों पर चर्चा होती होगी, बेमिसाल किस्से और कहानियाँ कही-सुनी जाती होंगी।

जमाली ने कविताएँ रचीं, किताबें लिखीं। सोचने की बात है कि किसी और युग, किसी और

"यह प्रसिद्ध सूफी कवि और दरबारी शेख जमाली कांबोह की कब्र है। उनके बगल में किसी कमाली की कब्र है, जिनकी पहचान अज्ञात है।"

कमाली को उनकी बहन भी बताया जाता है। लेकिन यह भी कहा जाता है कि चूँकि दोनों कब्रों पर एक-एक पंख (जो उस समय कलम का प्रतीक था) अंकित है, इसलिए दोनों पुरुष थे – या कम से कम समाज उन्हें पुरुष मानता था।

आखिर कमाली था कौन? एक व्यक्ति, या महज़ एक खयाल? यह एक रहस्य बनकर रह गया है। मगर इन्सान की सोच तो कहीं भी जा सकती है, है ना? किसने देखा, किसने सुना, किसने लिखा? किसने कहानी बुनी, किसने गीत बनाया, और किसने महज़ एक मज़ाक?

एक बार जमाली, बादशाह हुमायूँ के साथ गुजरात के एक सैन्य अभियान पर गए थे। वहीं उन्होंने अन्तिम साँस ली। बादशाह के फरमान से जमाली के शव को दिल्ली लाया गया और उसी मकबरे में दफनाया गया, जिसे उन्होंने अपने जीवनकाल में बनवाया था। उनके इन्तकाल के बाद कमाली पर क्या बीती होगी? क्या उन्हें यातनाएँ सहनी पड़ी होंगी? क्या वे उसी आँगन में रो-रोकर टूट गए होंगे? कौन जानता है? शायद सिर्फ समय और वह आँगन, खुला आकाश, चिड़ियाँ, मस्जिद, पेड़ और आसपास घूमते कुत्ते-बकरियाँ।

कहते हैं कि जमाली-कमाली मस्जिद में जिन्नों का बसेरा है। यह सच है या अफवाह, कौन जाने। हम इतना ज़रूर जानते हैं कि दुनिया में बहुत-सी जगहें और बातें हमारी सीमित समझ से परे हैं। और शायद यही इस दुनिया का सौन्दर्य है। अगर सब कुछ वैसा ही होता जैसा दिखता है, तो फिर रहस्य कहाँ बचता?

और जिन्हें ये मान्य न हो, वे सवाल उठाएँ, बेशक उठाएँ। सोच और ज़ुबान आपकी अपनी है। हम बिना बात किसी आस्था का तिरस्कार नहीं करेंगे। हाँ, कभी-कभी सवाल ज़रूर पूछेंगे – मगर वो बातें फिर कभी।

जमाली-कमाली के समकालीन, महान चित्रकार और शिल्पकार माइकल एंजेलो के जीवन में भी टॉमासो देई कवलिएरी नामक एक रईस का उल्लेख मिलता है। उन्हें उनका प्रिय, साथी या प्रेरणा-स्रोत कहा जाता है। चाहे जमाली-कमाली हों या माइकल एंजेलो-टॉमासो, क्या यह जानना सचमुच ज़रूरी है कि उनका रिश्ता आध्यात्मिक था, भावनात्मक या कुछ और?

महत्वपूर्ण यह है कि दो लोगों के बीच प्रेम और संगत की इच्छा को समाज आज भी सन्देह की नज़र से देखता है। शायद इसलिए कि जो उसकी समझ से परे है, वही उसे गलत या अपराध लगता है।

तो फिर इन्सान की पहचान क्या है?

उसके कर्म? उसकी रचनाएँ? उसके शब्द? या समाज के साँचे में ढल जाना, या न ढल पाना?

खैर। यदि इन सारी परतों को हटाकर, समाज की बेड़ियाँ काटकर सोचा जाए, तो शायद जमाली-कमाली के असली अर्थ से मुलाकात हो सके। कभी मौका मिले, तो वहाँ ज़रूर जाइएगा। शायद वो जगह, वहाँ के पेड़-पक्षी, कोई चौकीदार या कोई अजनबी आपसे कोई राज़ साझा कर दे।

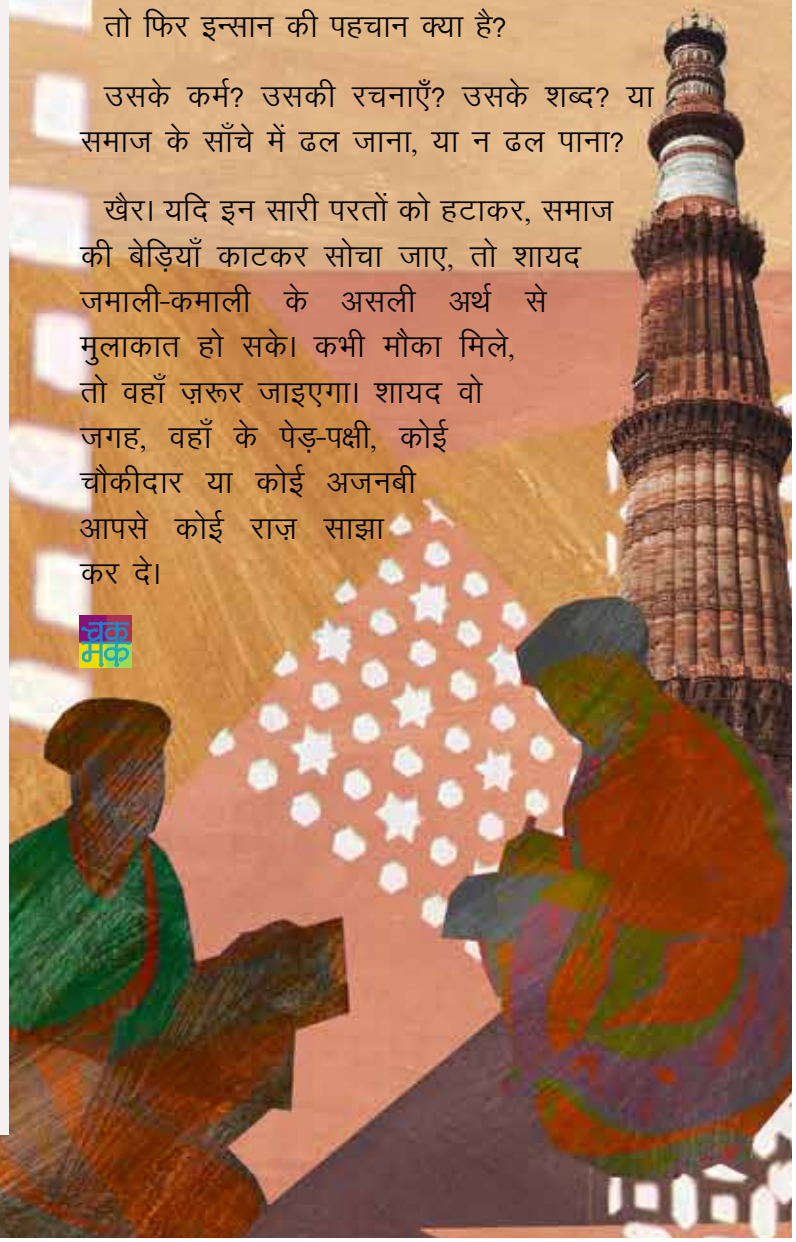

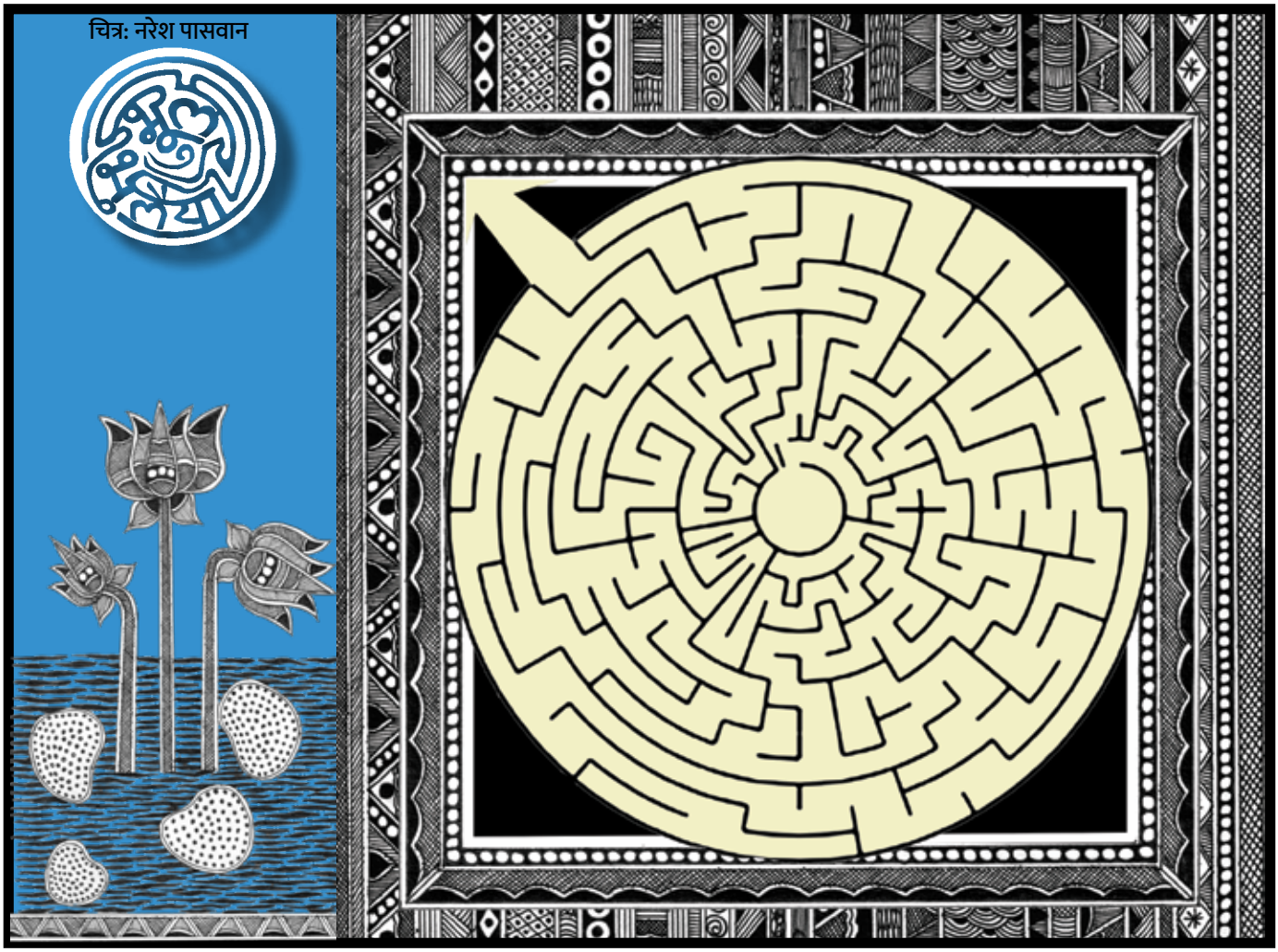

चित्र: नरेश पासवान

भारतीय प्रेस और नियतकालिक पत्रिका रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 2023 की धारा 4 (2) के अन्तर्गत मासिक पत्रिका 'चकमक बाल विज्ञान पत्रिका' से सम्बन्धित जानकारी

प्रकाशन का स्थान : भोपाल

प्रकाशन की अवधि : मासिक

प्रकाशक का नाम : टुलटुल बिस्वास

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462026

मुद्रक का नाम : आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि.

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : प्लॉट न. 15-बी
गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया
गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021

सम्पादक का नाम : विनता विश्वनाथन

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462026

उन व्यक्तियों के नाम
जिनका स्वामित्व है : रैक्स डी. रोज़ारियो

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462026

मैं टुलटुल बिस्वास यह घोषणा करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर) टुलटुल बिस्वास 25 जनवरी 2026

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

तुमने जनवरी अंक में पेज 15 पर दिया लेख 'मैं क्या खाऊँ?' पढ़ा होगा। खाने के मामले में हमारी कई मान्यताएँ हैं — क्या खाना चाहिए, क्या नहीं। तुम या तुम्हारे परिवार वाले या दोस्त इस बारे में क्या सोचते हो, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

ज्ञान/सीखने को जाँचने का एकमात्र तरीका आम तौर पर परीक्षा को माना जाता है। यह सही है या गलत? तुम इस बारे में क्या सोचते हो और क्यों?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

मेरे खयाल से सब खाना चाहिए। पौष्टिक खाना जैसे दाल, चावल, तरकारियाँ, मांस, मछली इत्यादि। जब हम कमज़ोर होते हैं तब डॉक्टर हमें मांस, अण्डे खाने की सलाह देते हैं। मेरे परिवार वाले भी कहते हैं कि दालों के साथ-साथ अण्डे, मांस, मछली से भी प्रोटीन मिलता है। अदरक, प्याज़-लहसुन में कई अच्छे गुण होते हैं और ये स्वाद बढ़ाते हैं। कुछ शाकाहारी लोगों का प्याज़-लहसुन के बारे में मानना है कि ये नहीं खाने चाहिए। जबकि ये भी कुदरती तौर से गुणी होते हैं। कई लोग जंग फूड बहुत पसन्द करते हैं। इनका अधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। किन्तु कभी-कभी स्वाद के लिए मैं इन्हें पार्टी वगैरह में खा लेती हूँ। वैसे इनको बनाने में समय भी कम लगता है।

यक्षिका, दूसरी, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बद्रीपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड

हमारे यहाँ मम्मी अण्डा और दूध एक साथ खाने से या आगे-पीछे खाने से मना करती हैं। जब मैं तीन साल का था तो एक बार मैंने दोनों चीज़ें एक साथ खा ली थीं। दरअसल हुआ यूँ कि मैं घर से दूध पीकर गया और बाहर उबला हुआ अण्डा खा लिया। घर आने के बाद मुझे उलटी हो गई। पिछले साल मैं 14 दिसम्बर को दिल्ली में सिलेक्ट सिटी वॉक मॉल में 'कोन्नीचिवा जापान' देखने गया था। वहाँ मैंने कई जापानी डिश खाईं। उनमें से एक डिश थी 'ताकोयाकि'। खाने के बाद पता चला कि उसमें उबले हुए ऑक्टोपस का मीट भी डाला गया था। मुझे लगता है कि 'ताकोयाकि' खाकर मैंने कोई गलत काम नहीं किया। हमने डोरा केक और पकौड़े जैसी एक चीज़ भी खाई जिसके अन्दर आलू भरा हुआ था और वह कुरकुरा भी था।

अनुभव कुमार, पाँचवीं, डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, कुरुक्षेत्र, हरयाणा

खाना सिर्फ खाना नहीं होता। वह हमारी सेहत का खज़ाना भी होता है। लेकिन क्या हर खाना हमारी सेहत के लिए सही है? मेरे और मेरे परिवार की सोच यह है कि खाना मौसम और शरीर की ज़रूरत के हिसाब से होना चाहिए। मेरे बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि जो फल और सब्ज़ी जिस मौसम में आती है, उस मौसम में वही हमारे शरीर को सबसे ज़्यादा फायदा पहुँचाती है। हम अक्सर दूसरों को देखकर या विज्ञापनों के चक्कर में ऐसी चीज़ें खाने लगते हैं जो हमारे शरीर के लिए बनी ही नहीं हैं। असल में वही भोजन सबसे बेहतर है जो हमें अन्दर से मज़बूत बनाए और जिसे शरीर आसानी से पचा सके।

मेरे दोस्तों का मानना है कि आजकल बीमारियों की सबसे बड़ी वजह हमारा खान-पान है। विज्ञापन में जो लोग बाहर के खाने का प्रचार करते हैं वे खुद कभी उसे नहीं खाते। पुराने ज़माने में लोग सादा और शुद्ध खाना खाते थे। इसलिए वे लम्बे समय तक स्वस्थ रहते थे। आज की नई पीढ़ी स्ट्रीट फूड और पैकेट वाली चीज़ों के पीछे पागल है और यही कारण है कि आज बीमारियाँ इतनी बढ़ गई हैं। जो खाना सिर्फ जुबान को स्वाद दे वह शरीर के लिए ज़हर के समान है। हमें विज्ञापन के बहकावे में न आकर अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए

नैना कुमारी, बारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, दरभंगा, बिहार

चित्र: कनिका बिष्ट, सातवीं 'सी', विद्या भारती स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

मेरे दादाजी और पिता कहते हैं अगर सारे पृथ्वीवासी मांस ना खाए तो खेत बनाते-बनाते जगह कम हो जाएगी। पर मेरी दादी कहती हैं कि बेचारे पशुओं के पास भी हमारे जैसा जीवन है तो उनको नहीं मारना चाहिए

अजुर्न सोफत्ता, चौथी, रमणा विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी, चंगलपेट, तमिलनाडु

क्यों क्यों

मेरे घर में मुर्गा नहीं खाया जाता है। मेरी माँ मुर्गा खाने से इसलिए रोकती हैं क्योंकि उसे खाने से पहले काटा जाता है। इससे एक पशु की हत्या हो जाती है। मेरी माँ कहती हैं किसी को उसके परिवार से दूर करके उसकी हत्या करके खाना अच्छी बात नहीं है। उसके बदले हरी सब्ज़ी-साग और घर का खाना खाना चाहिए।

शुभम कुमार, सातवीं, परिवर्तन सेंटर, ग्राम बड़हुलिया, सिवान, बिहार

हमें मांस, मटन, चिकन नहीं खाना चाहिए। हमें दूसरे जीवों की जान नहीं लेना चाहिए। अगर हमें कोई मार दे तो हमारे माँ-पापा को बहुत बुरा लगता है, वैसे ही मुर्गियों को कोई मारे तो उनको भी बुरा लगता है। उन मासूम मुर्गियों की हत्या करने वाले लोगों को हम सज़ा नहीं दे पाते। पर ऊपर वाला सब कुछ देखता है। ऊपर वाला ही मासूम जीवों की हत्या करने वाले लोगों को सजा देता है। चाहे वो कोई भी हो उसे सज़ा मिलती ही मिलती है। भगवान सभी को जीने का हक देते हैं और इन्सान उन्हें मारकर खा जाते हैं।

हीन वर्मा, चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला, सूरजपुरा, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

खाने के मामले में हमारे घर में कई मान्यताएँ हैं। मसलन हमारी दादी कहती थीं कि हमें गर्म तासीर का भोजन रोज़ नहीं खाना चाहिए, जैसे कि आम, अण्डा, मांस-मछली, अदरक-लहसुन। आयुर्वेद और लोक-मान्यताओं में इसे किसी खास मौसम या स्थिति में सीमित मात्रा में लेने की सलाह दी जाती है। कहा जाता है कि ज़्यादा गर्म तासीर वाला खाना खाने से शरीर में “गरमी” बढ़ सकती है। इससे मुँह में छाले, नकसीर, पेट की जलन या त्वचा की समस्याएँ हो सकती हैं, खासकर गर्मियों में। इसलिए कई परिवारों में इसे सर्दियों में ज़्यादा और गर्मियों में कम खाने की परम्परा है।

गर्मियों में ठण्डी तासीर वाली चीज़ें जैसे दही, छाछ, पानी लेने की सलाह दी जाती है। माँ का मानना है कि घर का बना सादा खाना सबसे अच्छा होता है जैसे कि दाल, सब्ज़ी, रोटी। क्योंकि इससे सेहत भी ठीक रहती है और पाचन भी। वे तला-भुना मसालेदार और बाहर का खाना कम खाने पर ज़ोर देती हैं। मेरे दोस्त अलग तरह से सोचते हैं। उनके लिए स्वाद और सुविधा ज़्यादा मायने रखते हैं। इसलिए फास्ट फूड भी चल जाता है। परन्तु खाने को लेकर हमारी सोच है कि जब तक कैलोरी और पोषण का हिसाब सही है, तब तक कोई भी खाना बुरा नहीं। अगर सन्तुलन रखा जाए, मौसम, मात्रा और शरीर की ज़रूरतों का ध्यान रखा जाए तो खाना डर नहीं, आनन्द बन जाता है।

ज्योति कुमारी, बारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

चित्र: संगम मौर्या, चौथी 'बी', यश विद्या मन्दिर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मछली, मुर्गा आदि जानवर इसलिए नहीं खाना चाहिए क्योंकि वो कुछ भी खा लेते हैं। कोई लोग मांस-मछली खाकर स्वस्थ रहते हैं, कोई दाल-चावल। कोई लोग मांस-मछली कभी-कभी खाते हैं। मेरे घर में मुर्गा खाते हैं। पर मैं नहीं खाता। मैं जब भी मुर्गा खाता हूँ तो मुझे अजीब-सा लगता है। मुझे बार-बार छींक आती है जब तक कि मैं कुछ और ना खा लूँ। मेरे दोस्त कहते हैं कि तू मांस खाया कर। इसलिए तुझे बार-बार बुखार व कमज़ोरी होती है। पर मुझे अच्छा नहीं लगता तो मैं क्या करूँ।

संजय बरकड़े, पाँचवीं, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, तरवानी, बीजाडांडी, मंडला, मध्य प्रदेश

हमारे दोस्त तो बाहर का खाना खाते हैं, जैसे समोसे, बताशे, फिंगर। कभी-कभी हम भी खाते हैं। पर हमें घर से ये सब खाने के लिए मम्मी-पापा पैसे नहीं देते। हमें भेलपूरी बहुत पसन्द है जिसे हम घर पर बनाकर खाते हैं। पापा हमारे कहते हैं कि घर का खाना ही खाना चाहिए, जो साफ होता है और जिसे खाकर हम बीमार नहीं होते। मुझे दाल-चावल खाना बहुत पसन्द है। पर वो कभी-कभी बनता है। केला, गाजर, मूली खाना हमें अच्छा लगता है।

नन्दिनी, छठवीं, अपना स्कूल, तातियागंज सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

हमें अच्छा खाना चाहिए, जिसमें प्रोटीन और विटामिन हों, ताकि हमारा शरीर बोले, "थैंक यू, बहुत मज़ा आया। ऐसा खाना नहीं खाना चाहिए जो हेल्थ को नुकसान पहुँचाए। वरना पेट बोलेगा, "अरे! ये क्या खिला दिया? और फिर डॉक्टर अंकल से दोस्ती करनी पड़ेगी।

सुमित पाण्डे, आठवीं, आरोही बाल संसार, ग्राम प्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

बेलिया पलाश

डॉ किशोर पँवार
कोलाज: कनक शशि अनिल

भारत के मैदानी इलाकों में मार्च-अप्रैल में जंगल के अधिकांश पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। पतझड़ी जंगलों में यह आम बात है। इस समय अधिकांश पेड़ सूखे ठूँठ जैसे लगते हैं। लेकिन इन सूखे पेड़ों के बीच एक पेड़ नारंगी-लाल रंग के फूलों से लदा रहता है। सुबह-शाम यह पेड़ तरह-तरह के पशु-पक्षियों से गुलज़ार रहता है। ड्रोंगो, कौवे, काली-पीली मैना, स्लेटी-काली छोटी पूँछ वाली ब्राह्मणी मैना, बहुरंगी बसन्ता और एकदम चमकीले हरे पंख वाले तोतों का मज़मा भी लगा रहता है। कभी-कभार लाल और काले मुँह वाले बन्दर भी आते रहते हैं।

अब तुम समझ गए होगे कि यहाँ बात हो रही है पलाश, टेसू, ढाक या खाकरे के पेड़ की। अँग्रेज़ी में इसे 'फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट' कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम *ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* है।

ये तो बात हुई पेड़ की। पर बिलकुल इसी रंग-रूप, पत्तियों और फूलों की बनावट वाली एक बेल घने पतझड़ी जंगलों में मिलती है। पेंच टाइगर रिज़र्व में जब मैंने इसे पहली बार देखा तो हैरान रह गया। ऊँचे-ऊँचे, सीधे खड़े पेड़ों पर लिपटी हुई ये बेल मोटी रस्सी जैसी लगती है। पूछने पर पता चला कि ये बेलिया पलाश है। इसका वैज्ञानिक नाम *ब्यूटिया सुपरबा* है।

जिस पेड़ से यह बेल लिपटी होती है उसके ऊपरी हिस्से में पहुँचकर यह पत्तियों और नारंगी रंग के फूलों से लदी छतरी जैसा बना लेती है। इसकी ऊपर की डण्डी कमज़ोर होती है। इसलिए ये डण्डी आसपास के किसी पेड़ के मोटे तने से लिपटकर ऊपर पहुँच जाती है, जहाँ होती है ढेर सारी धूप। यही तो चाहिए थी इसकी पत्तियों को भोजन बनाने और फूलों में रंग-रस भरने के लिए।

पलाश की तरह इसकी पत्तियाँ भी तीन-तीन के समूह में होती हैं – वही 'ढाक के तीन पात'। लेकिन इसकी पत्तियों के किनारे थोड़े लहरदार होते हैं और ये पलाश की पत्तियों जितनी गोल नहीं होतीं। इसकी झूलती हुई टहनियों के सिरों पर फूल झुण्ड में लगते

हैं। तितलियों जैसे ये फूल पलाश के फूलों से थोड़े बड़े होते हैं। मज़ेदार बात है कि डार्क सेरूलीयन और पी ब्लू तितलियों की इल्लियाँ इसी बेल की पत्तियों पर पलती हैं।

इसके फूल मीठे मकरन्द से भरे होते हैं। वैसे तो इस पर भी पलाश के पेड़ की तरह ढेर सारे पशु-पक्षियों का जमावड़ा लगा रहता है। परन्तु इसका परागण केवल गिलहरी और शकरखोरे ही करते हैं। गर्मियों के सूखे मौसम में जब भोजन के स्रोत कम हो जाते हैं, ये पेड़ पक्षियों के लिए बड़े अहम होते हैं।

पलाश के पेड़ से बहुत ही सुन्दर लाल-गुलाबी रंग का गोंद निकलता है। इसके फूलों का रंग पानी में घुल जाता है। देश के कुछ हिस्सों में आज भी होली इसके फूलों से बने केसरिया रंग से खेली जाती है।

तो तुम इसके ताज़े या सूखे फूलों को पानी में गलाकर रंग खेलो या फूलों से रंगोली या कागज़ पर चित्र बनाओ। जल्दी करना ये फूल कुछ ही समय तक खिलते हैं।

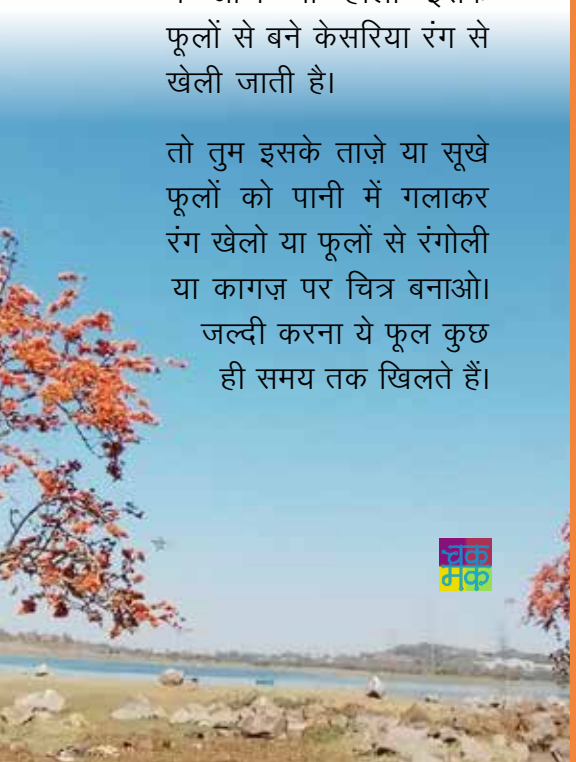

अन्तर ढूँढो

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में नौ से ज़्यादा अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?

चित्र: नरेश पासवान

माथा पच्ची

फटाफट बताओ

गोल-गोल चेहरा
पेट से रिश्ता गहरा

(रोटी)

एक डिब्बी में कई चोर
सबका मुँह काला
रगड़ दिया जो उन्हें ज़ोर से
झक से हुआ उजाला

(माचिस की तीली)

परिवार हरा, हम भी हरे
एक थैली में तीन-चार भरे

(मटर)

क्या है जिसे तोड़ने के
बाद लोग खुश होते हैं?

(रिकॉर्ड)

मैं जितना सोखता हूँ, उतना ही
गीला हो जाता हूँ। मैं कौन हूँ?

(तौलिया)

लोग मुझे बनाते हैं, बढ़ाते हैं,
कटाते भी हैं। मैं कौन हूँ?

(बाल)

क्या है जो ऊपर-नीचे तो
जाती है, पर अपनी जगह से
हिलती नहीं?

(सीढ़ी)

1. दिए गए गोलों में 1 से 7 तक की संख्याएँ इस तरह लिखो कि हर गोले में लिखी संख्याओं का जोड़ समान हो। इसके कई उत्तर हो सकते हैं।

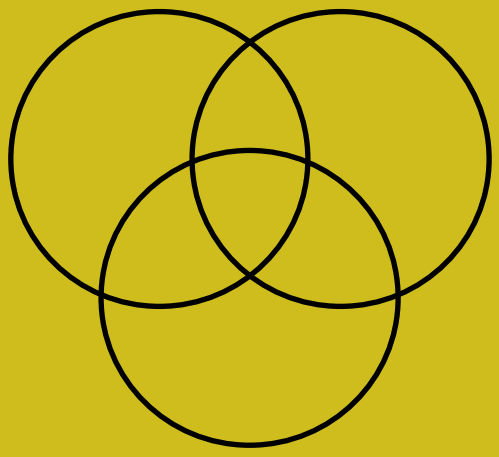

2. सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। कौन-सा?

एक .... लड़की थी।
वह एक .... पर
बैठी थी। उस ....
पर कुछ ....
लड़कियाँ .... गीत
गा रही थीं।

3. जसप्रीत के पास 10 इंच चौड़ा और 5 इंच ऊँचा एक बॉक्स है। वह उसमें कितने सिक्के रख सकती है कि उसका बॉक्स खाली ना रहे?

4. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग स्माइली आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी स्माइली आएँगी?

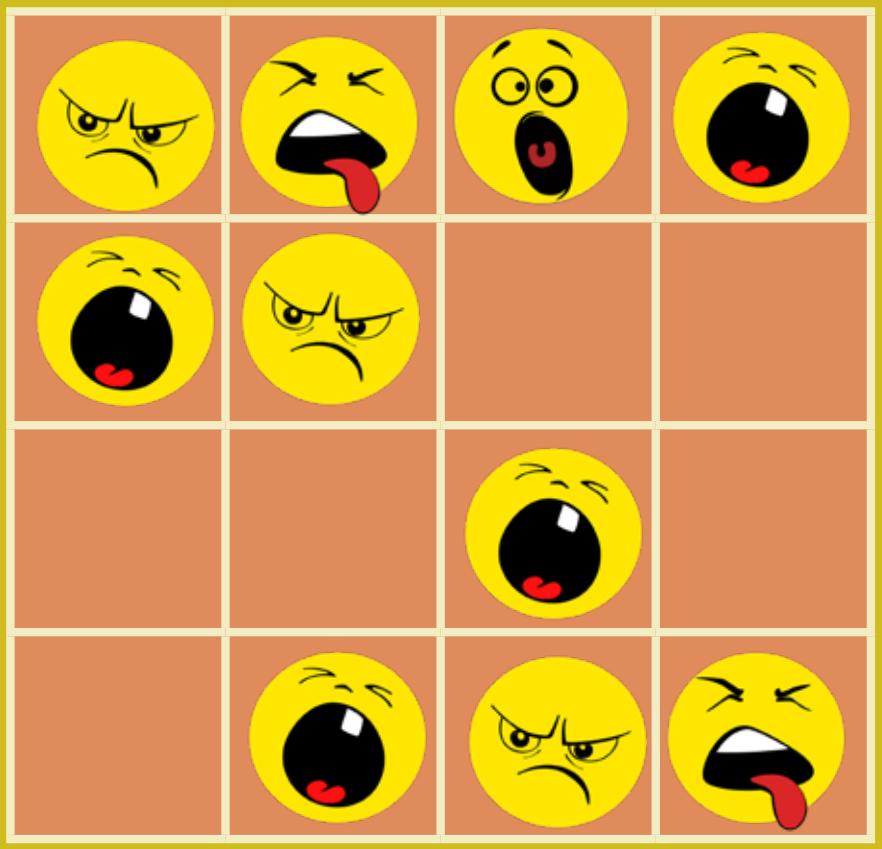

5. केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करना है, कैसे करोगे?

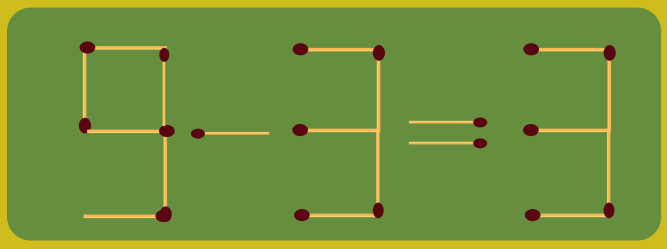

6. एक दुकानदार ने कुछ बेचते हुए कहा, "ले लीजिए मैडम, पूरा परिवार जीवन भर बैठकर खाएगा।" उसने यह बात क्या चीज़ बेचते हुए कही होगी?

7. इस चित्र में तुम्हें कितने त्रिभुज दिखाई दे रहे हैं?

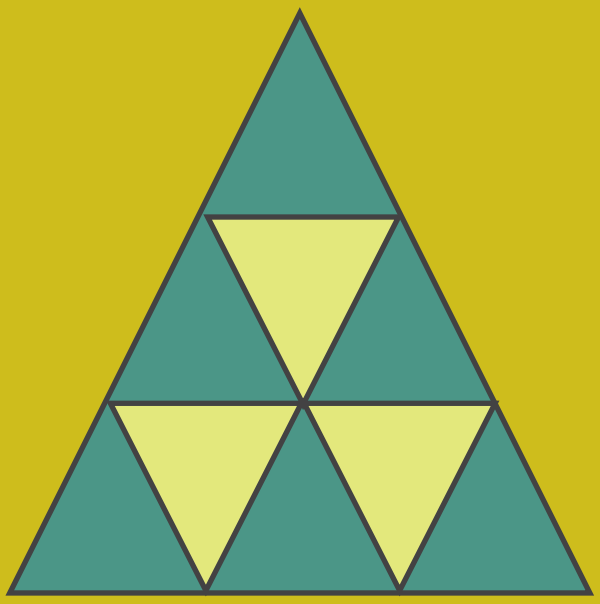

8. डॉली, एलीना, मायरा और चार्ली ने लाल, पीले, हरे और नीले रंग की टी-शर्ट पहनी है। इनमें से केवल वही सच बोलता है जिसने नीली टी-शर्ट पहनी है। उनके बीच कुछ इस तरह की बातचीत हुई:

1. डॉली: मायरा ने लाल टी-शर्ट पहनी है।
2. एलीना: डॉली ने पीली टी-शर्ट नहीं पहनी है।
3. मायरा: एलीना ने नीली टी-शर्ट पहनी है।
4. चार्ली: मैं कल नीली टी-शर्ट पहनूँगा

क्या इस बातचीत के आधार पर तुम यह बता सकते हो कि नीली टी-शर्ट किसने पहनी है?

9. काँच की एक बोतल के अन्दर एक सिक्का डालकर कॉर्क से उसका मुँह बन्द कर दिया गया है। कॉर्क को बिना हटाए और बोतल को बिना तोड़े सिक्के को बाहर निकालने का कोई तरीका हो सकता है क्या?

10. दी गई ग्रिड में कई देशों की राजधानियों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

चि	का	स्टॉ	क	हो	म	दे	लं	जी
ली	ज	ले	इ	स्ला	मा	बा	द	पा
कै	ढा	का	मे	का	ब	र्लि	न	ह
न	डे	ठ	र्ता	बु	दी	ग	दे	वा
ब	न	मां	क	ल	ब	नै	दा	ना
रा	ब	डू	रा	सी	द	र्न	रो	द
पे	रि	स	ची	पु	आ	बू	धा	बी
क्यो	टो	जी	रो	सें	टि	थिं	ला	जिं
ला	क्यो	बी	म	सिं	गा	पु	र	ग

जवाब पेज 42 पर

मेरा पन्ना

गर्ल्स और बॉइज़

इरा
दूसरी
प्रज्ञानम इंटरनेशनल स्कूल
खण्डवा, मध्य प्रदेश

मुझे क्रिकेट खेलना बहुत पसन्द है। स्कूल में स्पोर्ट्स का टाइम होता है तो सारे बॉइज़ क्रिकेट खेलते हैं। जब मैं उनसे पूछती हूँ कि मैं भी तुम्हारे साथ खेल लूँ। तो वो कहते हैं कि ये बॉइज़ का गेम है। गर्ल्स नहीं खेलतीं।

मैंने उनसे कहा कि बॉइज़ और गर्ल्स एक समान होते हैं। गर्ल्स जो कर सकती हैं वो बॉइज़ भी कर सकते हैं। और बॉइज़ जो कर सकते हैं वो गर्ल्स भी कर सकती हैं। जैसे गर्ल्स कर्सिव राइटिंग लिखती हैं तो शार्विल और हार्दिक भी तो कर्सिव सीख लेते हैं। पर वो नहीं मानते। मैंने सोचा है स्कूल में गर्ल्स टीम और बॉइज़ टीम का फोटो लगाकर चार्ट ले जाऊँ और असेंबली में दिखाऊँ।

चित्र: शाम्भवी, पहली 'ए', बिलाबॉन्ग हाई इंटरनेशनल स्कूल, वडोदरा, गुजरात

पिकअप में खेल

हर्षित
दूसरी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, जोग्यूड़ा
नैनीताल, उत्तराखण्ड

मैं कार्तिक को लेने गया था। हम लोग पिकअप में खेल रहे थे। पिकअप बन्द कर रहे थे तो मेरा हाथ मुड़ गया था। मेरा हाथ सीधा ही नहीं हो रहा था। फिर मैं घर आया। मम्मी ने हाथ में तेल लगाया। फिर डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर ने मेरे हाथ में एक महीने का प्लास्टर लगा दिया।

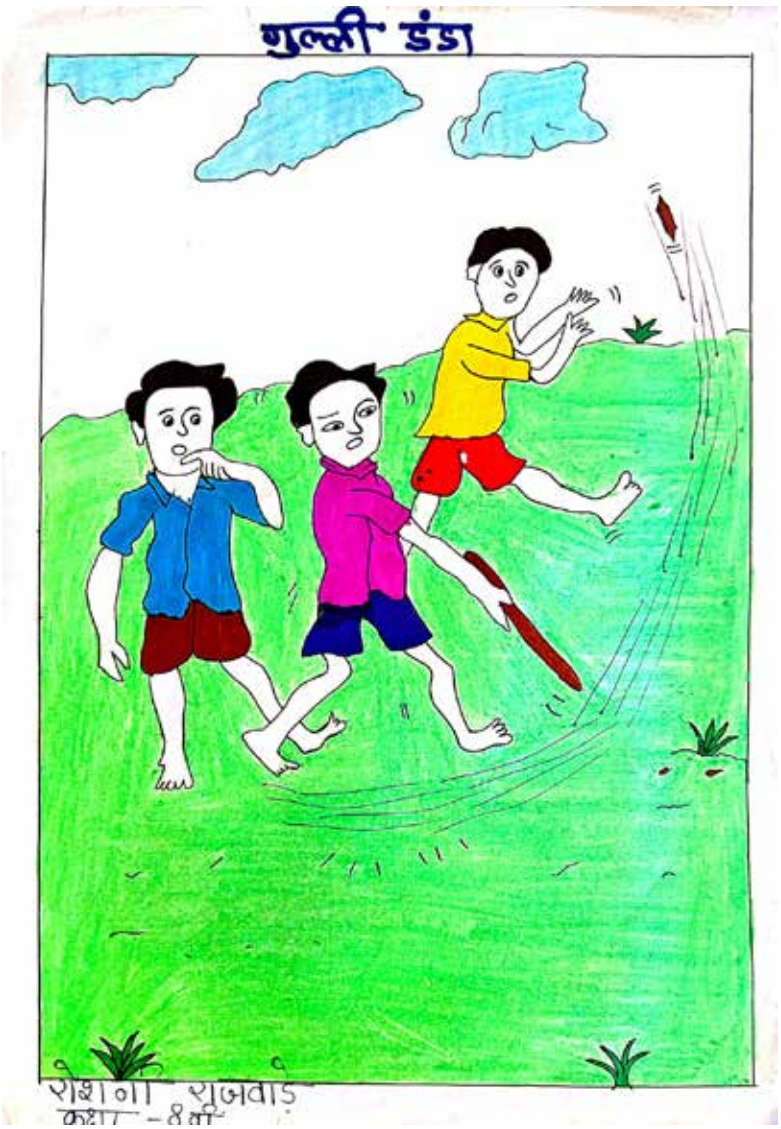

चित्र: रोशनी राजवाड़े, आठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

हमारा लंच टाइम कोना

रिद्धी कपूर
पाँचवीं, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

हम दोस्तों के समूह की एक खास जगह है, जहाँ हम लंच के समय शोरगुल से दूर बैठना पसन्द करते हैं। हमारी वो जगह लाइब्रेरी के पीछे नीम के बड़े पेड़ के नीचे का शान्त कोना है। वहाँ की हवा ठण्डी रहती है और छाँव में ऐसा लगता है जैसे हम अपनी ही किसी गुप्त दुनिया में आ गए हों।

हम रोज़ वहीं बैठकर अपने टिफन खोलते हैं और एक-दूसरे का खाना बाँटते हैं। कभी हम चुटकुले सुनाते हैं, कभी अपने सपनों की बातें करते हैं। कभी-कभी बस चुपचाप बैठकर हिलते पत्तों का, भागते बच्चों का और कभी बस शान्त पलों का आनन्द लेते हैं। वह जगह बहुत आलीशान तो नहीं है, पर उसमें हमारी सैकड़ों प्यारी यादें बसती हैं, जो स्कूली जीवन को सच में खास बनाती हैं। शायद आगे चलकर हम सब अलग-अलग रास्तों पर चले जाएँ, पर वह कोना और हमारी दोस्ती हमेशा मेरे दिल के सबसे शान्त कोने में ज़िन्दा रहेंगे।

मेरा पन्ना

हाथी चलते हैं

भूमि धौलपरिया
चौथी, सावित्रीबाई फातिमा शेख लाइब्रेरी
पी सी नगर बस्ती, भोपाल, मध्य प्रदेश

हाथी चलते हैं तो मुझे खुशी होती है। जब वो हमारे यहाँ आते, तो हम लोग उसके ऊपर बैठकर सवारी करते। बहुत अच्छा लगता। पर अब वो हमारे यहाँ नहीं आते। कभी-कभी जब हम वन विहार जाते हैं तो वहाँ पर और भी जानवर दिखते हैं। जैसे कि मगर, साँप, बन्दर, चिड़िया बहुत सारे। तो हम लोग खुश हो जाते हैं।

सबक

प्रज्वल भसारकर
छठवीं, ज़िला परिषद स्कूल, खुटाळा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

मुझे अँधेरे से डर लगता है। मैं कभी रात में बाहर नहीं जाता हूँ। उस दिन मामा ने शहर लौटते हुए मुझे कुछ पैसे दिए थे। मैं खाना खाने के बाद चॉकलेट लेने दुकान जा रहा था। अचानक बिजली चली गई। मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अँधेरे में मैं किसी से टकराया। वो एक लड़का था। वो बहुत ही काला था। इतना काला कि अँधेरे में दिखाई नहीं देता। मैं डर गया।

तभी सामने से एक स्कूटी आई। उसकी लाइट में मुझे उस काले लड़के का चेहरा दिखाई दिया। वो कोई और नहीं, बल्कि मेरी क्लास का ही एक लड़का था। हे, भगवान! कोई इतना काला भी हो सकता है। मुझे यकीन नहीं हो रहा था। मैंने ये बात सुबह सबको बताई। सबको किस्सा मज़ेदार लगा।

मगर कुछ दोस्त बोले, “किसी के रंग का मजाक उड़ाना ठीक बात नहीं है। ये तो कुदरत की देन होती है। भगवान ने उसे वैसे बनाया तो वो क्या करे? उस इन्सान का मज़ाक यानी भगवान की कला का अपमान होता है।” मुझे ये बात दिल पर लग गई। तब से मैंने कभी उसका मज़ाक नहीं बनाया।

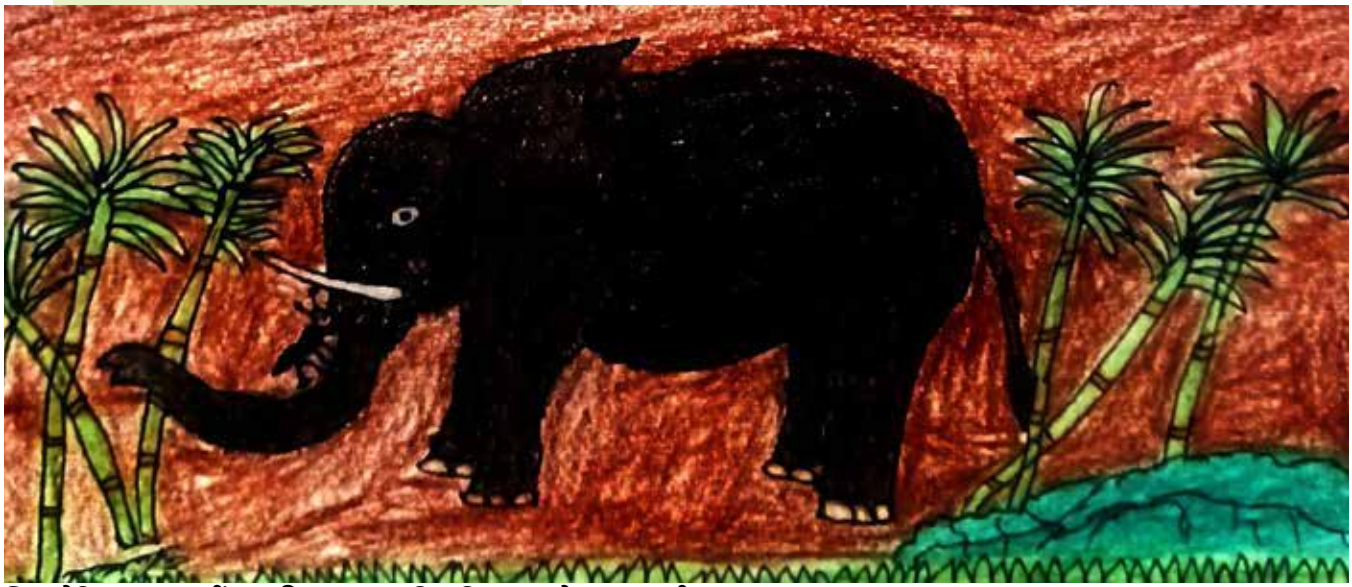

चित्र: मोहित राज, सातवीं, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सोडावास, पाली, राजस्थान

चित्र: अर्पिता चौधरी, पाँचवीं, जिंगल बेल स्कूल, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मेरा पन्ना

तेरा दो नम्बर का छूट गया

भव्या चतुर्वेदी
दूसरी 'जी', क्राइस्ट सीनियर सेकेंड्री स्कूल
गुना, मध्य प्रदेश

"तेरा दो नम्बर का छूट गया," मैंने माणिक से कहा जब उसने बोर्ड पर लिखे उत्तर डस्टर से मिटा दिए। माणिक सबसे पहले तो दाँत में अँगूठा लगाकर मुझसे कट्टी हो गया। फिर टीचर के पास जाकर बोला, "मैम, भव्या ने मुझसे बेड वर्ड कहा कि तू दो नम्बर का चू#या।"

मैडम ने आव देखा ना ताव और मेरी पीठ में दो चपाट लगाई। फिर बोलीं, "ऐसे बात करते हैं, बेड मैनर्स। से सॉरी टू हिम। चलो तुम्हें फादर के पास लेकर चलती हूँ।"

इतने में क्लास खतम हो गई और इंग्लिश की टीचर आ गईं। उन्होंने मुझसे पूछा, "बेटा आपने क्या कहा था? सच बताओ?"

चित्र: नित्या कुमारी, छह साल, एवीएम स्कूल, जुहू, मुम्बई, महाराष्ट्र

मैं बोली, “मैम इसने बोर्ड पर लिखा मिटा दिया था तो मैंने बोला था कि तेरा दो नम्बर का छूट गया। इसने गलत सुना और फिर मुझे नहीं पता कि इसने क्या बोला कि हिन्दी वाली मैम ने मेरी पिटाई लगा दी।”

मैम ने फिर उस लड़के को बुलाया और कहा, “पहले तो भव्या को सॉरी बोलो क्योंकि उसकी पिटाई हुई जबकि वो तुम्हें समझा रही थी। आगे से ठीक से ध्यान दिया करो कि कोई क्या बोल रहा है और अपने कान खुले रखो।”

मैंने यह सारी बात घर पर बताई। मैं लगातार रो रही थी क्योंकि मैम ने आज पहली बार मुझे पनिश किया था। फिर दादी ने मुझे प्यार से समझाया कि बच्चों पर पहला अधिकार उनकी मम्मी का होता है और फिर टीचर का। इसलिए टीचर अगर डाँट दे या थोड़ा-सा मार भी दे तो बुरा नहीं मानना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि पता है तुम्हारे पापा और चाचा को तो उनके सर-मैडम क्लास के बाहर मुर्गा बना देते थे और डण्डे/स्केल से मारते थे, वो भी ज़ोर-ज़ोर से। यह सब सुनने के बाद मैं चुप हुई और पापा से चिप्स का एक पैकेट दिलाने का बोला।

सॉरी

मनस करन
पाँचवीं, गाँव मिश्रौलिया
बस्ती, उत्तर प्रदेश

बहुत दिनों से मैं और पापा जब भी बाहर घूमने या सब्ज़ी खरीदने जाते, कोई ना कोई उनका दोस्त मिल जाता। फिर वो लोग इतनी-इतनी बातें करते, जैसे मेले में बिछड़े हुए भाई मिले हों। लगता सारे ब्रह्माण्ड की बातें ये लोग आज ही करेंगे।

लेकिन एक और बात। अगर पापा को लगता बेचारी परेशान हो गई होगी, तो वह पूछते, “बेटा कुछ खाओगी?” मेरे मन में बहुत सारी बातें आतीं। लेकिन मैं सोचती कि नहीं यार ऐसे नहीं करना चाहिए। तो मैं बोलती, “रहने दो पापा।” घर लौटकर मेरा मूड तो खराब हो जाता। फिर मम्मा पूछतीं, “क्या हुआ?” मैं बोलती, “कुछ नहीं। पापा किसी से भी बात करने लगते हैं।”

लेकिन एक दिन एक अंकल मिले। उन्होंने पहले मुझसे पूछा, बेटा, “क्या मैं तुम्हारे पापा से दो मिनट बात कर लूँ?” मेरे तो मन में आया कि बोलूँ नहीं आप मत बात करो। पर अगर ये बोलती तो दो बातें होतीं। एक, मेरे बोलने का कोई फायदा नहीं होता। वे लोग हँसकर टाल देते और बातें करने लगते। दूसरा, बुरा मान जाते और चले जाते। लेकिन तभी पापा बोले, “अरे। बात कर लीजिए।” और वो लोग बात करने लगे। ब्ला, ब्ला, ब्ला...। फिर वो अंकल बोले, “ठीक है, चलते हैं। सॉरी बेटा।” मैं चौंक गई। रास्ते में मेरी और पापा की बात हुई तो मैंने उन्हें बताया कि आप लोग तीस मिनट बातें किए।

माथा पच्ची

जवाब

1.

इसके कई जवाब हो सकते हैं। दो यहाँ दिए गए हैं:

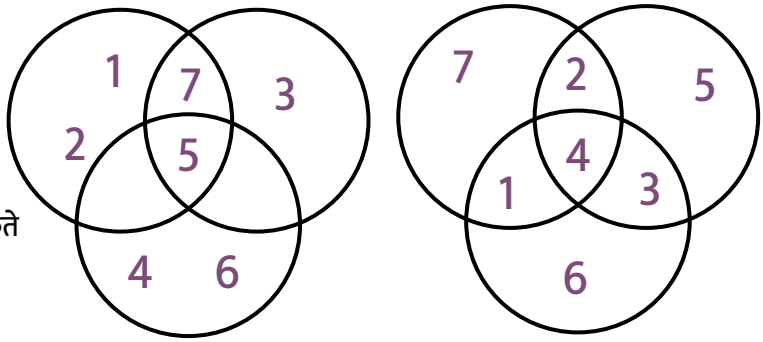

2. पहाड़ी

3. एक, क्योंकि एक सिक्का रखने के बाद बॉक्स खाली थोड़े ही होता।

5.

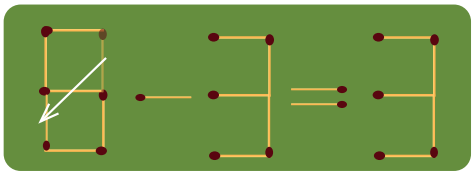

6. चटाई

7. 13 त्रिभुज

8. अगर डॉली ने नीली टी-शर्ट डॉली पहनी है तो इस स्थिति में एलीना का कथन सही हो जाएगा, जो नहीं हो सकता। अगर एलीना ने नीली टी-शर्ट पहनी है तो इस स्थिति में मायरा का कथन सही हो जाएगा। ये भी नहीं हो सकता। अगर मायरा ने नीली टी-शर्ट पहनी है तो वह सच बोल रही है। पर ये भी नहीं हो सकता क्योंकि मायरा के अनुसार एलीना ने नीली टी-शर्ट पहनी है। इस स्थिति में दो लोगों ने नीली टी-शर्ट पहनी होगी जो सम्भव नहीं है। इसलिए नीली टी-शर्ट चार्ली ने पहनी है।

9. कॉर्क को धकेलकर बोतल के अन्दर डाल लो और सिक्का निकाल लो।

10.

चि	का	स्टॉ	क	हो	म	दे	लं	जी
ली	ज	ले	इ	स्ला	मा	बा	द	पा
कै	ढा	का	मे	का	ब	र्लि	न	ह
न	डे	ठ	र्ता	बु	दी	ग	दे	वा
ब	न	मां	क	ल	ब	नै	दा	ना
रा	ब	डू	रा	सी	द	र्न	रो	द
पे	रि	स	ची	पु	आ	बू	धा	बी
क्यो	टो	जी	रो	सें	टि	थिं	ला	जिं
ला	क्यो	बी	म	सिं	गा	पु	र	ग

4.

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

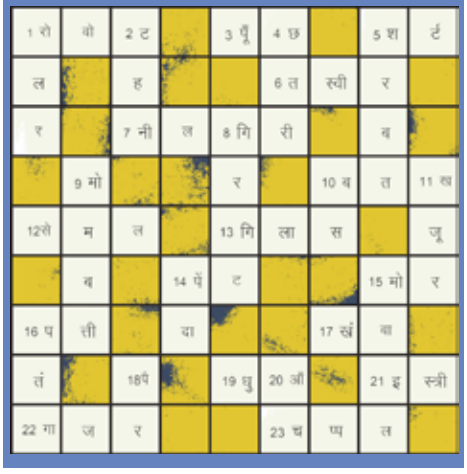

सुडोकू-93 का जवाब

1	3	4	5	2	7	9	8	6
5	6	8	4	9	3	7	2	1
9	7	2	8	6	1	3	4	5
2	9	3	1	5	4	6	7	8
6	8	5	7	3	9	2	1	4
4	1	7	2	8	6	5	3	9
8	2	6	3	1	5	4	9	7
7	5	1	9	4	2	8	6	3
3	4	9	6	7	8	1	5	2

देश का पहला पुस्तक मेला

आजकल देश के लगभग हर शहर में साल भर में कई पुस्तक मेले लगते हैं। देश-विदेश के विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकों को एक जगह देखना काफी मज़ेदार होता है। 1970 के दशक में दिल्ली और कोलकाता में वार्षिक पुस्तक मेले का सिलसिला शुरू हुआ। लेकिन भारत का पहला पुस्तक मेला 1918 में कोलकाता में आयोजित किया गया था। बांग्ला में इसे बोई मेला कहा जाता है। यह मेला स्वदेशी आन्दोलन का हिस्सा था। इसे राष्ट्रीय शिक्षा परिषद ने कॉलेज स्ट्रीट पर आयोजित किया था। इसका उद्देश्य यह दिखाना था कि देश के पास अपनी शिक्षा व्यवस्था को सँभालने की क्षमता है।

एक गाय ने किया है औज़ार का इस्तेमाल

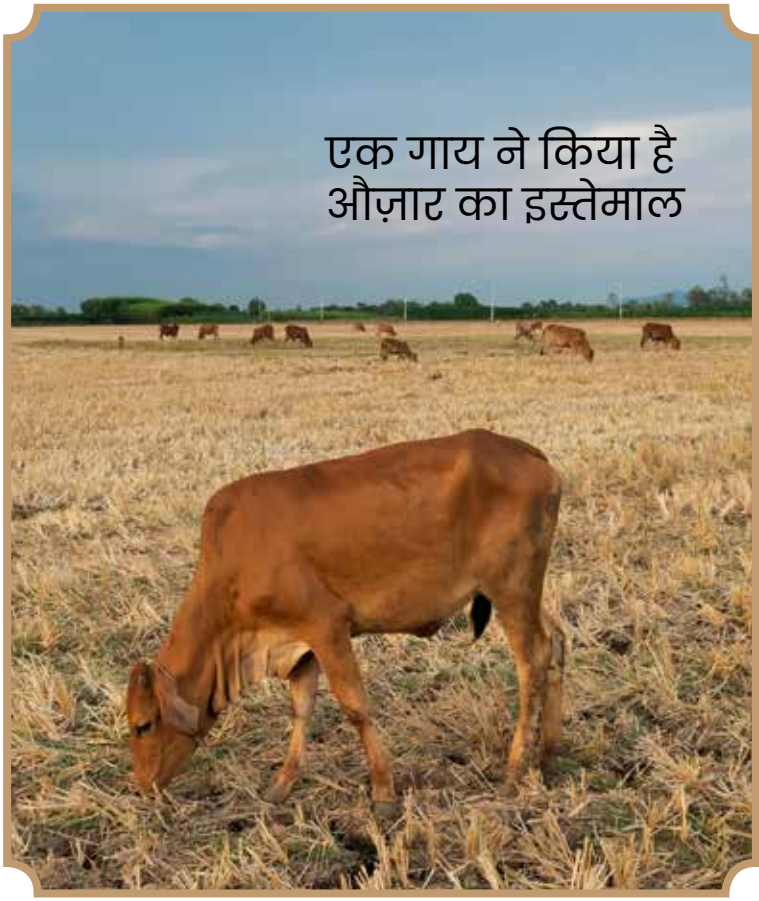

एक समय माना जाता था कि सिर्फ मनुष्य औज़ारों का इस्तेमाल करते हैं। बाद में पता चला कि चिम्पैंजी, कौए और कुछ अन्य पक्षी भी ऐसा करते हैं। अब इस लिस्ट में वेरोनिका नाम की एक पालतू गाय भी शामिल हो गई है। वेरोनिका झाड़ू या लकड़ी से अपने शरीर के वो हिस्से खुजलाती है, जहाँ पहुँचना उसके लिए मुश्किल होता है। यही नहीं वह मोटी चमड़ी वाले ऊपरी हिस्सों पर झाड़ू का बालों वाला सिरा और संवेदनशील हिस्सों पर चिकनी छड़ी वाला सिरा इस्तेमाल करती है। वह सख्त हिस्सों को ज़्यादा ज़ोर से रगड़ती है और नाजुक हिस्सों को हल्के से। चूँकि ज़्यादातर पालतू जानवरों को ऐसी चीज़ें नहीं मिलतीं जिन्हें वे इस तरह इस्तेमाल कर सकें। इसलिए यह तय नहीं है कि वेरोनिका औज़ारों का इस्तेमाल करने वाली एकमात्र गाय है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

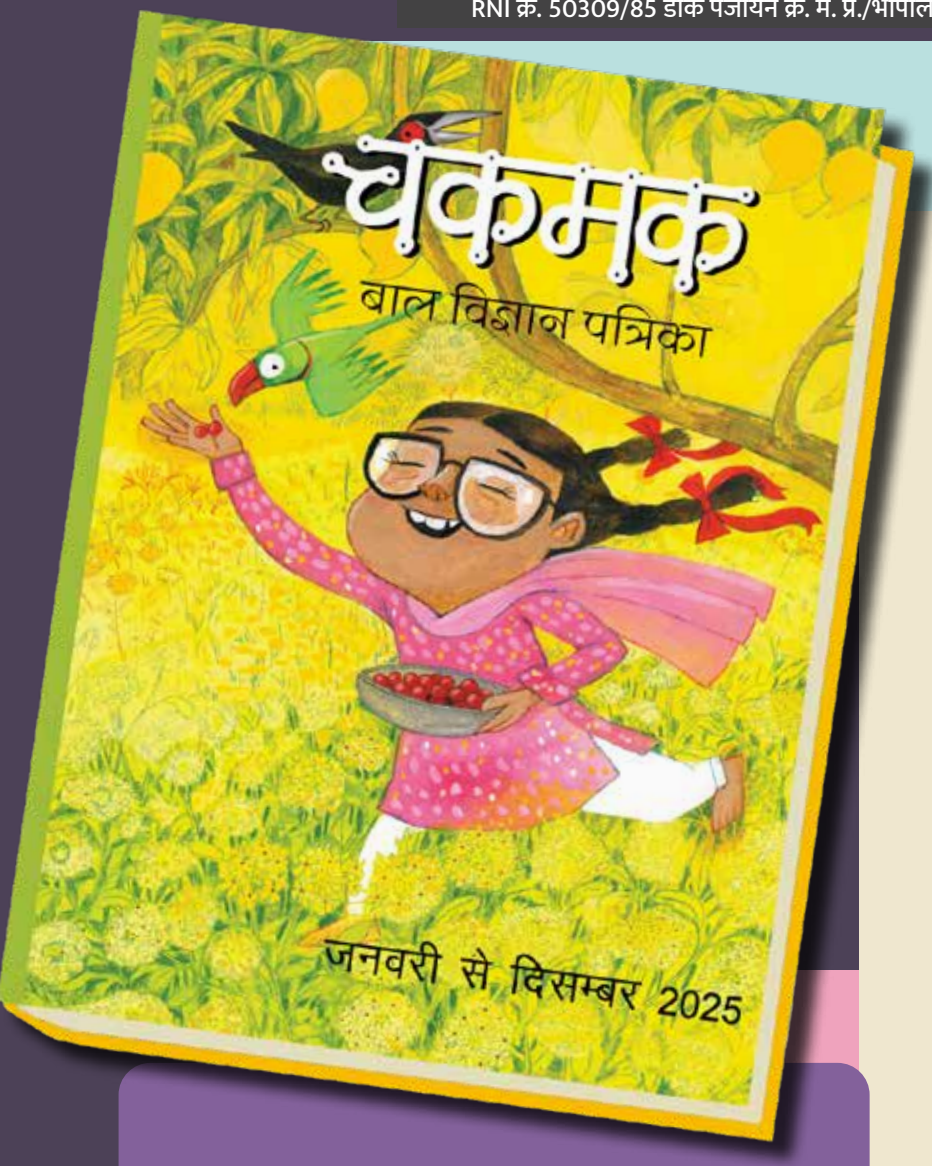

चकमक बाउंड वॉल्यूम
फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स अवार्ड, 2024
प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

चकमक बच्चों की बेहद सोच-समझकर तैयार की गई पत्रिका है। इसमें हर उम्र के पाठकों के लिए कुछ न कुछ होता है। रोचक पहेलियों और दिमागी कसरतों से लेकर बच्चों के लिए लिखने वाले बेहतरीन लेखकों की कहानियों तक — सब कुछ इसमें मिलता है। यह बच्चों से सम्मान के साथ बात करती है और उनमें विज्ञान व पढ़ने के प्रति रुचि जगाती है। सबसे अच्छी बात ये है कि यह सब सुन्दर चित्रों से भरे पन्नों में लिपटा होता है। इससे *चकमक* सिर्फ पढ़ने में ही नहीं, देखने में भी उतनी ही मज़ेदार लगती है।

प्रिया कुरियन

प्रिया कुरियन बच्चों की किताबों की मशहूर चित्रकार, लेखक व एनीमेटर हैं। प्रिया एक दशक से अधिक समय से *चकमक* के साथ जुड़ी हुई हैं।

मोबाइल गेम्स, रील्स और शॉर्ट्स के ज़माने में बच्चों को किताबों से जोड़ना मुश्किल लगता है ना? *चकमक* इसे आसान बना सकती है। *चकमक* का सब्सक्रिप्शन या बाउंड वॉल्यूम एक बेहतरीन तोहफा है बच्चों के लिए। हर महीने रोचक कहानियाँ, लेख, पहेलियाँ, विज्ञान और गणित की गतिविधियाँ बच्चों को सोचने-समझने की दुनिया में ले जाती है। यह सिर्फ पढ़ने का ही नहीं, बल्कि अपने आपको बाकी लेखकों और चित्रकारों के साथ अपनी रचनाओं को छपते देखने का मौका भी देती है।

चकमक के बाउंड वॉल्यूम मँगाने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

चकमक सब्स्क्राइब करने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन